mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-19 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

19 जनवरी 2025 रविवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

विनेश फोगाट करेंगी...

@ पेज 7

सांसद प्रिया सरोज और क्रिकेटर रिंकू सिंह के परिजन दोनों की शादी को राजी

जौनपुर (एजेंसी)। : जौनपुर जिले की मछलीशहर सीट से सपा सांसद प्रिया सरोज की शादी क्रिकेटर रिंकू सिंह से होने जा रही है। शादी को लेकर दोनों के परिजन राजी हैं। प्रिया के पिता

● एक साल से रिंकू और प्रिया के बीच हो रही थी बातचीत

और सपा के विधायक तूफानी सरोज ने शनिवार को कहा कि शादी को लेकर अभी प्रथम स्तर की बातचीत हुई है। बातचीत सकारात्मक हुई है। रिंकू और प्रिया भी शादी करना चाहते हैं।

प्रिया सरोज के पिता तूफानी सरोज ने यह भी बताया कि दोनों की अभी सगाई नहीं हुई है। सगाई

की तारीख दोनों की रजामंदी और समय को देखकर तय किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि रिंकू सिंह अभी टी-20 मैच में बिजी हैं। इसके बाद आईपीएल वह खेलेंगे। प्रिया 31 जनवरी से संसद सत्र में व्यस्त रहेंगी। इसके बाद ही दोनों की सगाई पर विचार किया जाएगा। दोनों की सुविधाओं के अनुसार सगाई की डेट तय की जाएगी।

तूफानी सरोज ने यह भी खुलासा किया कि प्रिया सरोज और रिंकू सिंह एक साल से आपस में बातचीत कर रहे थे। ये दोनों इंतजार कर रहे थे कि दोनों के परिवार वाले क्या चाहते हैं। जब दोनों बच्चों की आपस में रजामंदी है तो अभिभावक भी सहमत हैं। शादी की पहल सबसे पहले किसकी तरफ से की गई है इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि दोनों (रिंकू और प्रिया) ही जानें कि रिश्ते की पहल किसकी तरफ से की गई है। इसके बारे में हमें नहीं पता। उनका प्रश्न हमसे क्यों पूछ रहे हैं।

प्रिया के पिता ने कहा कि उन्होंने रिंकू सिंह के पिता से शादी को लेकर बातचीत की है। वह भी दोनों की शादी को लेकर सहमत हैं। गुरुवार को उनकी रिंकू सिंह के पिता से बातचीत हुई थी। सारी बातें अभी तय नहीं है। दोनों परिवार बैठकर बाद की बातें तय करेंगे। बता दें कि प्रिया सरोज समाजवादी पार्टी के टिकट पर मछलीशहर से सांसद हैं। वह सुप्रीम कोर्ट की वकील भी हैं। प्रिया देश की सबसे युवा महिला सांसद भी हैं।

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप ने रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म करने का लिया प्रण

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करवाने का प्रण ले लिया है। वह शपथ ग्रहण के बाद इस दिशा में बड़ा कदम उठा सकते हैं। ट्रंप ने यूक्रेन में शांति समझौता करने का संकल्प लिया है, लेकिन पदभार ग्रहण करने की उनकी तैयारी के बीच शांति की यह पहल पहले की तरह ही दूर की कौड़ी जान पड़ती है। रूस

और यूक्रेन तीन साल से चल रही लड़ाई के समापन पर केंद्रित किसी भी संभावित बातचीत से पहले वार्ता की मेज पर अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए युद्ध के मैदान में बढ़त बना लेने की कोशिश में जुटे हैं। पिछले साल रूसी सेना धीरे-धीरे लेकिन लगातार यूक्रेनी सुरक्षा बलों को धकेलती आगे बढ़ती रही है तथा पूर्व और दक्षिण में चार क्षेत्रों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश कर रही है। रूस ने युद्ध की शुरुआत में जबरन इन क्षेत्रों का विलय कर लिया था, लेकिन वह कभी पूरी तरह से कब्जा नहीं कर पाया। वह यूक्रेन के ऊर्जा नेटवर्क एवं अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को कमजोर करने की कोशिश में ताबड़तोड़ मिसाइलें और ड्रोन दाग रहा है। बदले में यूक्रेन ने रूस के कुर्स्क क्षेत्र में अपनी पैठ का विस्तार करने की कोशिश की है।

'जब मैंने देश छोड़ा...मौत कुछ ही मिनटों की दूरी पर थी'

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने उस दिन की आपबीती बताई है, जिस दिन उन्होंने अपना देश छोड़ा था। शेख हसीना ने कहा है कि 5 अगस्त को जब उन्होंने अपना देश छोड़ा तो मौत कुछ ही दूर खड़ी थी। उन्होंने रोंगटे खड़े कर देने वाली बात बताई। शेख

हसीना ने कहा कि वह और उनकी छोटी बहन शेख रेहाना पिछले वर्ष पांच अगस्त को केवल 20-25 मिनट के अंतर से मौत से बच गई थीं, जब छात्रों के नेतृत्व में हुए जन विद्रोह में उनकी अवामी लीग सरकार गिरा दी गई थी।

शेख हसीना ने अपनी पार्टी द्वारा फेसबुक पेज पर जारी एक संक्षिप्त ऑडियो नोट में हसीना ने अपनी जान बचाने के लिए ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने उनपर पूर्व में हुए दो हमलों को भी याद किया, जिनमें वे बाल-बाल बच गयी थीं। पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका मानना ??है कि ईश्वर ने उनके द्वारा कुछ महान कार्य करवाने की दैवीय योजना के तहत उनके जीवन को बचाया है। ऑडियो क्लिप में वह बांग्ला में कहती सुनाई दे रही हैं, ÷हम मौत से सिर्फ 20-25 मिनट के अंतर से बच गए। मुझे लगता है कि 21 अगस्त को हुई हत्याओं से बचना, कोटालीपारा में बड़े बम विस्फोट से बचना या पांच अगस्त 2024 को बचना, इसके पीछे अल्लाह की मर्जी, अल्लाह का हाथ होना चाहिए। अन्यथा, मैं इस बार नहीं बच पाती।÷

महाकुम्भ में योगी कैबिनेट की बैठक, अहम फैसलों पर लग सकती है मुहर

प्रयागराज (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुंभ में अपनी कैबिनेट की बैठक लेंगे। जानकारी के मुताबिक 22 जनवरी को योगी कैबिनेट की बैठक होगी। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सभी मंत्री बैठक में भाग लेंगे। उन्होंने बताया कि इस बैठक में उत्तर प्रदेश के विकास से

जुड़े अहम मामलों पर फैसला हो सकता है। सूत्रों ने बताया कि बैठक से पहले मुख्यमंत्री और मंत्री संगम में स्नान भी कर सकते हैं। इससे पहले वर्ष 2019 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली पहली सरकार में 29 जनवरी को कुम्भ के दौरान प्रयागराज में मंत्रिमंडल की पहली बैठक हुई थी। महाकुम्भ 13 जनवरी से शुरू हुआ है और 26 फरवरी तक जारी रहेगा। इससे पहले शुक्रवार को सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उनकी सरकार ने सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी को चिट्ठी लिखकर प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के विविध पहलुओं को समझने के लिए अधिकारियों को भेजने को कहा है। आदित्यनाथ ने शुक्रवार शाम लखनऊ में 5, कालिदास मार्ग स्थित अपने आवास पर वरिष्ठ पत्रकारों से बात करते हुए कहा, ÷इस बार जो एक बात सामने आई है, वह है पुलिस का व्यवहार। हमने युवा पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के बाद उन्हें महाकुंभ ड्यूटी के लिए तैनात किया है।

नहीं रुकेगा डॉक्टरों का प्रदर्शन

आरजी कर अस्पताल रेप-मर्डर केस में संजय रॉय दोषी करार

खारघर (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में महिला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या के मामले में कोर्ट ने संजय रॉय को दोषी करार दिया है। सोमवार (20 जनवरी) को अदालत संजय रॉय को सजा सुनाएगी। हालांकि, महिला डॉक्टर को न्याय दिलाने के लिए प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों का कहना है कि उनका प्रदर्शन जारी रहेगा। विभिन्न अस्पतालों के डॉक्टरों ने शनिवार को मुख्य आरोपी संजय रॉय की सजा पर असंतोष व्यक्त करते हुए विरोध रैली निकाली और मांग की कि सीबीआई इस अपराध में कथित रूप से शामिल सभी लोगों को न्याय के कटघरे में लाए।आरजी कर अस्पताल सहित शहर के सरकारी अस्पतालों के जूनियर और वरिष्ठ डॉक्टरों ने सियालदह अदालत के बाहर रैली निकाली और कहा कि जब तक अपराध के पीछे की सच्चाई पूरी तरह सामने नहीं आ जाती, उनका विरोध जारी रहेगा।

डॉक्टरों के सवाल: जूनियर डॉक्टर अनिकेत महतो ने कहा, ÷संजय को दोषी ठहराया गया है, लेकिन अन्य दोषियों का

क्या? वह अकेले इस अपराध को कैसे अंजाम दे सकता है? सीबीआई की जांच परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर आधारित थी, लेकिन घटनास्थल कहां है? हमारे पास अभी भी कई प्रश्न हैं, जिनका जवाब नहीं मिला है।÷ आंदोलनकारी डॉक्टरों ने यह भी सवाल उठाया कि केंद्रीय जांच एजेंसी ने कोई पूरक आरोपपत्र क्यों नहीं दाखिल किया।

सबूतों के साथ छेड़छाड़: एक अन्य आंदोलनकारी डॉक्टर असफाकउल्लाह नैया ने पूछा, ÷पूरक आरोपपत्र कहां है? सीबीआई ने कहा था कि वे जल्द ही एक आरोपपत्र दाखिल करेंगे।÷ डॉक्टरों ने मामले के बारे में 20 मुख्य सवाल उठाए, जिनके बारे में उनका दावा है कि उनका जवाब अब तक नहीं मिला है और बताया कि अपराध स्थल के साथ छेड़छाड़ की गई थी। डॉक्टरों ने कहा इसके स्पष्ट सबूत हैं। साथ ही, पीड़ित के शरीर पर कई वीर्य के नमूनों की मौजूदगी की क्या वजह है? हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने वालों को सजा नहीं मिल जाती।

पूर्व आईजी समेत 8 पुलिसकर्मी दोषी करार

शिमला (एजेंसी)। कोटखाई में वर्ष 2017 में 16 साल की नाबालिग से गैंगरेप के आरोपी की पुलिस हिरासत में हुई मौत के मामले में चंडीगढ़ की सीबीआई कोर्ट ने फैसला सुना दिया है। अदालत ने इस मामले में तत्कालीन आईजी जाहुर हैदर जैदी समेत 8 पुलिसकर्मियों को दोषी ठहराया है। एक अधिकारी और शिमला के पूर्व स्कनेगी को बरी कर दिया गया। अदालत ने पूर्व ढ्ढत जाहुर जैदी के अलावा मनोज जोशी, राजिंदर सिंह, दीप चंद शर्मा, मोहन लाल, सूरत सिंह, रफी मोहम्मद, रंजीत स्टेटा को दोषी करार दिया है। घटना 4 जुलाई, 2017 को कोटखाई क्षेत्र से 16 साल की लड़की गायब हो गई थी और 6 जुलाई को उसकी लाश हलैला जंगलों में मिली थी। पोस्टमार्टम में रेप की पुष्टि हुई थी। इस केस के आरोपी की पुलिस हिरासत में मौत हो गई थी। अब अदालत ने आरोपी पुलिसवालों को दोषी करार दिया है। इस मामले में 27 जनवरी को सजा सुनाई जाएगी

फिल्म के रिलीज से पहले सिनेमा हॉल में दी भेड़ की बलि, 5 गिरफ्तार

हीरो के पोस्टर पर खून से तिलक

तिरुपति (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश पुलिस ने एक फिल्म के शो से पहले एक सिनेमाघर में भेड़ की बलि देने के मामले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। दरअसल, 12 जनवरी को फिल्म 'डाकू महाराज' के शो से पहले का ये मामला बताया जा रहा है। बताया जा रहा है कि शो से पहले एक सिनेमाघर में एक भेड़ की बलि दी गई, जिस मामले में अब पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। एक अधिकारी ने शनिवार को गिरफ्तारी के बारे में जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि 'पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स' की ओर से ईमेल के माध्यम से इस मामले में शिकायत भेजी गई थी। प्राप्त शिकायत के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने शंकरैया, रमेश, सुरेश रेड्डी, प्रसाद और मुकेश बाबू को गिरफ्तार किया है। इन सभी आरोपियों को भेड़ की बलि देने और उसका खून फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाले अभिनेता एन. बालकृष्ण के पोस्टर पर लगाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। बता दें कि लोकप्रिय टॉलीवुड अभिनेता और हिंदूपुर के विधायक एन. बालकृष्ण आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू के रिश्तेदार हैं।

12 जनवरी को दी गई थी बलि: तिरुपति पूर्व के उप-विभागीय पुलिस अधिकारी वेंकट नारायण ने बताया, ÷पेटा से एक ईमेल आया था। उन्होंने एसपी

को ईमेल के माध्यम से शिकायत की थी। उसी दिन (16 जनवरी) हमने जांच की और तिरुपति पूर्व थाने में मामला दर्ज किया।÷ नारायण ने कहा कि पुलिस उन अन्य लोगों की भी तलाश कर रही है जिन पर इस पशु बलि में शामिल होने का संदेह है। पुलिस के अनुसार, 12 जनवरी को तड़के करीब तीन बजे भेड़ की बलि दी गई थी। उन्होंने बताया कि आरोपियों को तत्काल जमानत मिल गई।

लोगों ने बनाया था वीडियो: पशुबलि की इस घटना का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ था, जिसमें एक आरोपी को भेड़ का सिर धड़ से अलग किया। इस दौरान सैकड़ों दर्शक और फिल्म देखने वाले लोग खुशी मनाते हुए अपने मोबाइल फोन में इस कृत्य की तस्वीर लेने लगे।

ठंड की चपेट में दिल्ली सहित उत्तर भारत

मौसम विभाग के अनुसार 21 और 22 जनवरी को एक बार फिर दिल्ली में बारिश होने की संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनसीआर में ठंड में अभी भी कोई कमी नहीं दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने अगले दो दिनों तक दिल्ली-एनसीआर में कोहरे को लेकर अलर्ट जारी किया है। वहीं आने वाले दिनों में दिल्ली-एनसीआर के लोगों को बारिश का भी सामना करना पड़ सकता है। मौसम विभाग के अनुसार 21 और 22 जनवरी को एक बार फिर दिल्ली में बारिश होने की संभावना है। बारिश की वजह से ठंड और अधिक बढ़ सकती है। ऐसे में कहा जा सकता है कि दिल्ली-एनसीआर के लोगों को ठंड से फिलहाल कोई राहत नहीं मिलने वाली है। इसके अलावा पूरे उत्तर भारत में तापमान में काफी गिरावट दर्ज की जा रही है।

यूपी में ठंडी हवाओं का प्रकोप: वहीं यूपी की बात करें तो यहां भी ठंड से लोगों को राहत नहीं मिलने वाली है। यूपी में अगले कुछ दिनों तक हल्की बारिश, घने कोहरे और ठंडी हवाओं का प्रभाव रहेगा। मौसम विभाग ने पश्चिमी विक्षोभ के असर से उत्तरी राज्यों में 18 से 21 जनवरी तक बादलों की आवाजाही और बारिश का

अलर्ट जारी किया है। वहीं लखनऊ स्थित अमौसी मौसम केंद्र के अनुसार शुक्रवार को यूपी में सबसे कम तापमान इटावा में रिकॉर्ड किया गया, जो 6.0 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं सबसे ज्यादा तापमान 21.8 डिग्री सेल्सियस बांदा में रिकॉर्ड किया गया।

बिहार में ठंड से राहत नहीं: इसी तरह से बिहार में भी ठंड से लोगों का हाल बेहाल है। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिन में राज्य के न्यूनतम तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की जा सकती है। राज्य के अधिकांश भागों में अगले तीन दिन तक कोल्ड डे की स्थिती बनी रह सकती है। इसके बाद राज्य के तापमान में किसी विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है।

सैफ पर हमले का एक और संदिग्ध पकड़ा गया

मध्य प्रदेश से पुलिस ने दबोचा

मुंबई (एजेंसी)। एक्टर सैफ अली खान पर हमला मामले में मुंबई पुलिस ने मध्य प्रदेश से एक और संदिग्ध को हिरासत में लिया है। संदिग्ध से पूछताछ जारी है। यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि संदिग्ध वास्तविक हमलावर है या अपराध से जुड़ा कोई व्यक्ति है। फिलहाल पुलिस संदिग्ध की भूमिका की जांच कर रही है। इससे पहले मुंबई पुलिस ने शुक्रवार को भी एक संदिग्ध को हिरासत में लेकर पूछताछ की थी।

सूत्रों ने दावा किया है कि जिस शख्स को हिरासत में लिया गया, वह ट्रेन से ट्रेवल कर रहा था। पुलिस को सूचना मिली थी कि जिस संदिग्ध की तलाश वो कर रहे हैं वो एक एक्सप्रेस ट्रेन में ट्रेवल कर रहा है। इसके बाद लोकल पुलिस की मदद से उस यात्री को ट्रेन उतरवा लिया गया। सूत्र बता रहे हैं कि वो यात्री सैफ अली खान मामले के संदिग्ध की तरह दिखता है। पुलिस फिलहाल उसकी जांच कर रही है। अब तक किसी भी

तरह का ठोस सबूत पुलिस के हाथ नहीं लगा है।

मुंबई पुलिस ने गठित की है 35 टीमें : मुंबई पुलिस के मुताबिक, हमलावर ने संभवतः मुंबई में घूमने या दूसरी जगह भागने के लिए बांद्रा से ट्रेन ली थी। मुख्य आरोपी का पता लगाने के लिए पुलिस की कई टीमें वर्तमान में शहर के विभिन्न रेलवे स्टेशनों के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। पुलिस ने करीब 35 टीमों को आरोपी को हिरासत में लेने के लिए लगाया गया है। बता दें कि सैफ अली खान पर हमला हुए 50 घंटे से अधिक समय बीत चुका है, फिर भी हमलावर की तलाश जारी है। हमला का एक ताजा सीसीटीवी फुटेज सामने आया, जिसमें उसे सैफ अली खान पर हमला करने के बाद दादर की एक दुकान से हेडफोन खरीदते हुए देखा गया। गुरुवार (16 जनवरी) की तड़के बांद्रा स्थित उनके घर पर हुए हमले में सैफ अली खान को गर्दन और रीढ़ की हड्डी सहित कई जगहों पर चोटों का सामना करना पड़ा। सैफ अली खान को एक ऑटोरिक्शा में लीलावती अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी आपातकालीन सर्जरी की गई और कहा जाता है कि वह खतरे से बाहर हैं।

हमलावर ने मांगी थी एक करोड़ की फिरौती: सूत्रों के मुताबिक, हमलावर सैफ अली खान के छोटे बेटे जहांगीर के कमरे में घुसा और फिरौती के तौर पर 1 करोड़ रुपये की मांग की। खास बात यह है कि उन्होंने कमरे में खुले रखे आभूषणों को नहीं छुआ। यहां तक ??कि सैफ अली खान की पत्नी, अभिनेत्री करीन कपूर खान ने भी मुंबई पुलिस को सूचित किया कि हाथापाई के दौरान हमलावर आक्रामक हो गया, लेकिन उसने खुले में रखे आभूषणों को नहीं छुआ।

सैफ अली खान को दो-तीन दिन में मिल सकती है छुट्टी: सैफ अली खान का इलाज कर रही डॉक्टरों की टीम ने शनिवार को कहा कि अभिनेता की हालत में सुधार हो रहा है और दो से तीन दिनों में छुट्टी मिलने की उम्मीद है। 54 वर्षीय एक्टर को शुरुआत में लीलावती अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया था, लेकिन दिन में उन्हें सामान्य वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया। डॉ. नितिन ने कहा कि हमने उन्हें आराम की सलाह दी है और अगर वह सहज हैं, तो दो से तीन दिनों में हम उन्हें छुट्टी दे देंगे।

चाची ने बात करना किया बंद तो प्रेमी भतीजे ने बेटी समेत उतारा मौत के घाट

हापुड़ (एजेंसी)। लखनऊ के मलिहाबाद में महिला और उसकी मासूम बच्ची की हत्या के मामले में पुलिस ने चौंकानेवाला खुलासा किया है। पुलिस के मुताबिक महिला की हत्या प्रेम प्रसंग की वजह से हुई। हत्या करने वाला कोई और नहीं बल्कि उसका अपना भतीजा था। पुलिस के मुताबिक प्रेम प्रसंग में चाची ने जब भतीजे से बातचीत करना बंद कर दिया तो उसने गुस्से में आकर उसकी हत्या कर दी। पुलिस के मुताबिक ईसापुर के ही रहने वाले रिश्ते में भतीजे ने महिला की हत्या की। पैसा और जेवर गिफ्ट में देने के

बावजूद 15 दिन से बात करना बंद कर दिया था। पुलिस के मुताबिक हत्यारोपी गुरुवार रात घर के पीछे बिजली के खंभे से चढ़कर घर में घुसा। इस बीच किचन में रखे बर्तन की आवाज से महिला की नींद खुली। उसने दरवाजा खोला तो आरोपी ने कमरे में अंदर जाकर महिला से बात नहीं करने की वजह पूछी। फिर आरोपी ने माफी मांगी और रोने लगा। उसके बाद भी महिला ने उसे भला बुरा कहा तो पास में रखे डंडे और किचन के चाकू से उसने महिला पर हमला कर दिया। उसने महिलाकी मासूम बेटी की भी बेरहमी से गला काटकर हत्या कर दी। बता दें कि इस डबल मर्डर से इलाके में सनसनी फैल गई थी । 24 साल की महिला और उसकी 6 साल की बेटी की गला रेतकर हत्या से हड़कंप मच चगया। लखनऊ के ग्रामीण इलाके मलीहाबाद के ईशापुर गांव में यह वारदात हुई।

आर्मी मैराथन के चलते 19 को सुबह 6 बजे से बदली रहेगी शहर की ट्रैफिक व्यवस्था

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर में 19 जनवरी को सुबह 6 बजे से आर्मी मैराथन 2025 का आयोजन द्रोणाचल योद्धा स्थल एयरपोर्ट रोड मिलिट्री स्टेशन में किया जाएगा। इसके चलते इस दिन सुबह से शहर का ट्रैफिक बदला रहेगा। 21 किमी - सुबह 6 बजे योद्धा स्थल से शुरू होकर सिंगार चौली, लालघाटी चौराहा, वीआईपी रोड, रेत घाट, पॉलिटेक्निक चौराहा, बाण गंगा चौराहा, रोशनपुरा , अपैक्स बैंक तिराहा, प्लेटिनम प्लाजा अटल पथ से इसी मार्ग पर यू-टर्न होकर योद्धा स्थल पर समाप्त होगी। 10 किमी- सुबह 6-30 बजे योद्धा स्थल से शुरू होकर मेन गेट से सिंगार चौली, लालघाटी, वीआईपी रोड, कोहेफिजा रोटरी होकर यहीं से यू-टर्न लेकर योद्धा स्थल पर खत्म होगी। 5 किमी -सुबह 7 बजे से योद्धा स्थल से शुरू होकर मेन गेट से सिंगार चौली, दाता कॉलोनी, लालघाटी चौराहा से इसी मार्ग पर यू-टर्न होकर योद्धा स्थल पर समाप्त होगी। यह

करना होगा- मैराथन में भाग लेने वाले योद्धा स्थल द्रोणांचल तक पहुंचने के लिए अपने रजिस्ट्रेशन की हार्ड कॉपी के साथ सभी ओर के रोड से आ सकेंगे।

दो पहिया वाहन जौहरी फार्म हाउस योद्धा स्थाल के सामने, चार-पहिया वाहन स्टेंट हैंगर, नायरा पेट्रोल पम्प के पास पार्किंग, बस वाहन ओल्ड एयरपोर्ट रोड हनुमान मंदिर के सामने पार्क करेंगे। एयरपोर्ट पहुंचने के लिए सामान्य रूप से एयरपोर्ट जाने के लिए सभी वाहन, भारी तथा मालवाहक वाहनों को छोड़कर प्लेटिनम प्लाजा से रोशनपुरा, बाणगंगा, पॉलिटेक्निक चौराहा, रेतघाट, वीआईपी रोड, लालघाटी चौराहा होकर एयरपोर्ट जा सकेंगें। विपरीत परिस्थिति में आवश्यकता पड़ने पर उक्त मार्ग के स्थान पर लिली चौराहा, हमीदिया रोड़, बस स्टैंड, जेपी ओव्हर ब्रिज, बेस्ट प्राईज, करोंद, गांधीनगर होकर जा सकेंगे। एयरपोर्ट/गांधीनगर से नए भोपाल, मुख्य बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन की ओर आने वाले वाहन-गांधीनगर फ्लाइ ओव्हर ब्रिज के नीचे से नई जेल रोड, करोंद चौराहे, बेस्ट प्राइज से जेपी ओव्हर ब्रिज, हमीदिया रोड होकर नये शहर की ओर जा सकेंगे।इंदौर की ओर जो वाहन चालक अपने वाहन से इंदौर की ओर जाना चाहते है, वह माता मंदिर से डिपो, भारत माता चौराहा, भदभदा चौराहा, नीलबड़ होकर आ-जा सकेंगें। जो वाहन नए शहर से सीहोर की ओर जाना चाहते हैं, वे वाह न लिंक रोड नंबर-3, मैनिट चौराहा, भदभदा चौराहा, नीलबड़, रातीबढ़, झागरिया होकर आ-जा सकेंगे। प्लेटिनम प्लाजा से रोशनपुरा की ओर आने वाले वाहन माता मंदिर, प्लेटिनम प्लाजा, जवाहर चौक होकर आवागमन कर सकेगें।

वन्यजीव प्रबंधन में सुधार लाने फॉरेस्ट अफसरों का मंथन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के वानिकी पर मंथन के बाद वन विभाग अब वन्यजीव प्रबंधन क्षेत्रों में सुधार लाने और वन प्रबंधन को जनोन्मुखी बनाने पर मंथन कर रहा है।

इसके लिए फील्ड के अधिकारियों से सुझाव लिए जा रहे हैं और इन सुझावों के आधार पर भविष्य में नए प्रोटोकॉल तैयार किए जाएंगे। इन प्रोटोकॉल का उद्देश्य वन्यजीवों के लिए बेहतर रहवास सुनिश्चित करना और उन्हें किसी भी तरह के खतरे से बचाते हुए लोगों की जीवन-चर्या से जोड़ना है। वन और वन्यजीव प्रबंधन के क्षेत्रों में सुधार के लिए वन अधिकारियों की टीम आज से दो दिवसीय मंथन कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इस कार्यक्रम में वन प्रबंधन को जनोन्मुखी बनाने के लिए नए प्रोटोकॉल पर चर्चा हो

रही है। शुक्रवार और शनिवार को चलने वाले इस मंथन कार्यक्रम का आयोजन अपेक्स बैंक सभागार में किया जा रहा है। इसमें सभी मुख्य वन संरक्षक (सीसीएफ), मंडल वन अधिकारी (डीएफओ), और टाइगर रिजर्व के संचालकों को बुलाया गया है। यह उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह वानिकी सम्मेलन और आईएफएस सर्विस मीट के दौरान प्रदेश के सभी जूनियर और सीनियर अधिकारियों ने वानिकी व्यवस्था में सुधार के लिए मंथन किया था।

एमके पोंडा कॉलेज में लोहड़ी-मकर संक्रांति की धूम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल स्थित एम.के. पोंडा कॉलेज ऑफ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट में लोहड़ी और मकर संक्रांति के अवसर पर भव्य उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत रेड रोज ग्रुप के अध्यक्ष सुमित पोंडा ने की, जिन्होंने बिजमेनिया कार्यक्रम का उद्घाटन किया और विद्यार्थियों को खेल भावना की शपथ दिलाई।

प्रतियोगिता में बिज़नेस टाइकून प्रथम जबकि फॉर्च्यून हंटर ने द्वितीय स्थान हासिल किया। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. कल्पना टेवरे ने सभी को त्योहार की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर आयोजित बिजमेनिया प्रतियोगिता में चार हाउस टीमों ने भारत की विभिन्न दिशाओं की संस्कृति को प्रस्तुत किया।

बिज़नेस टाइकून ने पूर्व भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि फॉर्च्यून हंटर ने दक्षिण भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए द्वितीय स्थान हासिल किया।

कार्यक्रम में फायरलेस कुकिंग, लोक नृत्य, ट्रेडिशनल रैंप वॉक, रील मेकिंग, फोटोग्राफी और नोटिस बोर्ड डेकोरेशन जैसी विविध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। कॉलेज परिसर में लोहड़ी की परंपरागत रस्में निभाई गईं और विद्यार्थियों ने पतंगबाजी का आनंद लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रोफेसर चेतना राय और जया यदुवंशी ने किया। डीन यूजी डॉ. खुशबू छाबड़ा और प्रो. राहुल परिहार के मार्गदर्शन में समारोह संपन्न हुआ।

गौहर महल में हेरिटेज फेस्टिवल सीजन 5 शुरू हुआ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के गौहर महल में बेगम ऑफ भोपाल क्लब का हेरिटेज फेस्टिवल सीजन 5 शुरू हो चुका है। फेस्टिवल में भोपाली संस्कृति को दिखाने वाला परी बाजार लगाया गया है।इसके साथ ही नृत्य, संगीत और टॉक शो जैसे कई कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है। फेस्टिवल के पहले दिन जनजातीय नृत्य, टॉक शो, किस्से अनकहे और शाम-ए-कलाम जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि यह फेस्टिवल मातृ शक्ति को दिखाने वाला है। परी बाजार लगभग 150 साल पुरानी सांस्कृतिक विरासत है, जिसे नवीनीकरण के बाद फिर से पेश किया गया है। यह फेस्टिवल 19 जनवरी तक जारी रहेगा।

फेस्टिवल के पहले दिन प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल मुख्य अतिथि के रुप में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने परी बाजार का भ्रमण किया। साथ ही सूफी संगीत कार्यक्रम शाम-ए-कलाम का लुत्फ उठाया। अपने उद्बोधन में स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य की पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत बताने और कुछ सिखाने वाले है। इनके समय - समय पर आयोजन से मन आनंद से भर जाता है। कार्यक्रम की आयोजक रखशां शमीम ने बताया कि इस बार थीम सरगम ए गोंड है, जो मध्य प्रदेश की मशहूर सांस्कृतिक चित्रकला है। कार्यक्रम में भोपाली संस्कृति की झलक देखी जा रही है। वहीं, परी बाजार में पारंपरिक पोशाक और व्यंजन के करीब 65 स्टॉल्स लगाए गए है। यह स्टॉल्स राज्य समेत देश के कई कोनों से भी लगाए गए है। इनमें महिला बाल विकास, मध्य प्रदेश टूरिज्म, ट्राइबल और वेलफेयर मिनिस्ट्री स्टॉल्स भी लगे है। इस दौरान कार्यक्रम में आए बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

क्लास 6वीं में पढ़ने वाली हिमा परवेश ने बताया कि उसे इस कार्यक्रम से भोपाल की संस्कृति जानने को मिली। वहीं, बाल भवन स्कूल में पढ़ने वाली हरीम ने बताया कि उसे यहां क्ले आर्ट और सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत पसंद आया। कार्यक्रम के बारे में क्लब की वाइस प्रेसिडेंट बीनू धीर ने बताया कि कार्यक्रम का लक्ष्य भोपाल की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखना है। ताकि हमारी भविष्य की पीढ़ी इसे अपना सके।

कलेक्टर के आदेश पर 34 कॉलोनियों पर हुई थी एफआईआर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर की 34 अवैध कॉलोनियों के खिलाफ जिला प्रशासन अलग-अलग थाना क्षेत्रों में एक महीने पहले एफआईआर करा चुका है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई थी। उसके बाद उन्होंने जिला पंचायत सीईओ ऋषुराज सिंह को एक महीने के अंदर इनका अधिग्रहण करने के निर्देश दिए थे। लेकिन, कॉलोनियों को न तो अधिकृत किया गया और न किसी अधिकारी की जिम्मेदारी तय की गई।

इस कारण कलेक्टर ने दूसरी बार सीईओ सिंह को गुरुवार देर शाम पत्र जारी किया है। कुछ और कॉलोनियों को नोटिस भेजे गए हैं। अब नोटिस भेजने वाली कॉलोनियों की संख्या 85 हो गई है। नए सर्वे में 150 अवैध कॉलोनियों को चिह्नित किया है। इनका होना है अधिग्रहण- कुराना की 13, छावनी पठार की 6, सिंकदराबाद, पिपलिया बेरखेड़ी और थुआखेड़ा की 2-2, सुरैया नगर, कालापानी, कोटरा, सेवनिया ओंकारा, कान्हासैया, अरेड़ी, कोलुआखुर्द, शोभापुर जहेज और खंड़ाबड़ की एक-एक कॉलोनियां हैं। इन कॉलोनियों का अधिग्रहण होने के बाद ही रजिस्ट्री हो पाएगी।

श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति नयापुरा के चुनाव संपन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के कोलार रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति नयापुरा नसिया जी के चुनाव में एक बार फिर अनिल जैन को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया है। यह लगातार आठवीं बार है जब उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। चुनाव अधिकारी और जैन मंदिर दानिशकुंज के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन ने इसकी आधिकारिक घोषणा की। समाज के प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि अनिल जैन के पिछले कार्यकाल में मंदिर का पंचकल्याणक समारोह आयोजित किया गया और नई चौबीसी का निर्माण भी पूरा हुआ। नयापुरा स्थित यह जैन मंदिर अपनी आकर्षक साज-सज्जा और नक्काशी के लिए राजधानी के प्रमुख मंदिरों में विशेष स्थान रखता है। नई कार्यकारिणी में कपिल जैन को उपाध्यक्ष, सुधीर जैन को महामंत्री और अम्बर को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पुनीत को सह-मंत्री बनाया गया है। इसके अलावा नितेश जैन, विनय जैन, चक्रेश जैन और राहुल जैन को भी महत्वपूर्ण पद सौंपे गए हैं। निर्वाचन के बाद सभी पदाधिकारियों ने भगवान पारसनाथ का अभिषेक और पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर सभी ने सामाजिक समरसता, जीवदया और समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

10.50 लाख लोगों का पानी रोज हो रहा बर्बाद, अब फ्लो मीटर लगाएंगे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल नगर निगम सीमा में रोजाना 157.5 एमएलडी यानी करीब 15.75 करोड़ लीटर पानी बर्बाद हो रहा है। ये बर्बादी रोकने के लिए भोपाल नगर निगम पहली बार सवा करोड़ रुपए से 9 वाटर फ्लो मीटर लगाने जा रहा है। इन्हें चारों पेयजल स्त्रोतों की मेन फीडर लाइन और ग्रेविटी लाइन में लगाया जा रहा है। दरअसल, केंद्र सरकार ने पानी की बर्बादी रोकने के निर्देश दिए हैं। इसमें कहा गया है कि नॉन रेवेन्यू वाटर (एनआरडब्ल्यू) को कम किया जाए। एनआरडब्ल्यू यानी ऐसा पानी, जिससे निगम को कोई राजस्व नहीं मिलता। अब तक इसे मापने का निगम के पास पैमाना नहीं था। भोपाल

नगर निगम की जलकार्य शाखा के अफसरों का कहना है कि रोजाना करीब 450 मिलियन लीटर डे (एमएलडी) पानी सप्लाई किया जाता है। शहर की जनसंख्या के आधार पर आकलन करें तो भोपाल को केवल 292.5 एमएलडी पानी की जरूरत है। यानी 157.5 एमएलडी पानी लीकेज में बह जाता है या चोरी हो जाता है। रोजाना बर्बाद हो रहे इस पानी से 10.50 लाख लोगों की जरूरत पूरी की जा सकती है। फ्लो मीटर से पानी की सही मैपिंग की जा सकेगी। इन्हें लगाने के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है।

15-20 प्रतिशत पर लाना है केंद्र ने नॉन रेवेन्यू वाटर की मात्रा कम करने के निर्देश दिए हैं। भोपाल नगर निगम के ताजा आकलन के अनुसार भोपाल में रोजाना करीब 30-35 प्रतिशत पीने का पानी बर्बाद हो जाता है। अब केंद्र का निर्देश है कि इस नॉन रेवेन्यू वॉटर को घटाकर 15-20 प्रतिशत पर लाना है। इन लाइन में लगेंगे मीटर फ्लो मीटर भोपाल के चारों पेयजल स्त्रोतों में लगाए जाएंगे। इनमें कोलार की तीनों मेन फीडर लाइन और एक ग्रेविटी लाइन शामिल है। इसके अलावा नर्मदा की तीनों मेन फीडर लाइन और केरवा की दोनों मेन फीडर लाइन में भी फ्लो मीटर लगाए जाएंगे। इससे पानी बर्बादी का पता चलेगा।

दिल्ली में 2000 रुपए जुर्माना... दिल्ली जलबोर्ड ने पानी बर्बाद करने वालों पर 2000 रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया है।

भोपाल एयरपोर्ट की रैंकिंग में 27 अंक की छलांग, 42 से 15वें नंबर पर आया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। देश के 62 एयरपोर्ट पर हुए सर्वे में भोपाल एयरपोर्ट ने बड़ी छलांग लगाते हुए 15वीं रैंक हासिल की है। 2024 के सर्वे के दूसरे राउंड के जारी रिजल्ट में भोपाल को 5 में से 4.74 अंक मिले हैं। जुलाई में राउंड 1 के रिजल्ट में भोपाल को केवल 3.70 अंक मिले थे और रैंक 43 थी। इस सर्वे में मप्र का खजुराहो 8 वें और ग्वालियर 10 वें नंबर पर है। यह सर्वे जुलाई से दिसंबर तक किया गया था। इसके लिए एयरपोर्ट की सुविधाओं का 33 पैरामीटर पर परीक्षण किया गया और यात्रियों से भी फीडबैक लिया गया था। खास बात यह है कि 2023 में हुए इसी तरह के सर्वे में भोपाल दोनों राउंड में नंबर 1 पर था।

इस हिसाब से भोपाल को अभी अपनी पुरानी स्थिति पाने के लिए अभी और सुधार की

जरूरत है। इंदौर एयरपोर्ट इस सर्वे में शामिल नहीं होता है क्योंकि वह इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। उसका सर्वे अलग होता है। सर्वे के रिजल्ट को देखें तो भोपाल ने सभी 33 पैरामीटर में सुधार किया है। सबसे ज्यादा सुधार यहां रेस्त्रां में मिलने वाली खान-पान सामग्री की कीमतों में आया है। खान-पान सामग्री के उचित मूल्य की कैटेगरी में राउंड 1 में 2.99 नंबर मिले थे। राउंड 2 में यह बढ़कर 4.66 हो गए। यानी 1.67 का सुधार आया है। सर्वे के दौरान यात्रियों से सेफ्टी और हाईजिन के बारे में 4 सवाल पूछे गए थे। इनमें यात्रियों ने 5 में से 4.88 से 4.92 तक नंबर दिए। यात्रियों ने एयरपोर्ट पर महसूस होने वाले तनाव के स्तर में कमी होने की बात भी कही थी। छह महीने पहले तनाव का स्तर 1.16 था जो कम होकर 1.06 हो गया है। तरह के सर्वे में भोपाल दोनों राउंड में नंबर 1 पर था।

हर सवाल में लगने वाले समय, माउस एक्टिविटी की होगी मॉनीटरिंग, अफसर भी 5 मिनट पहले ही देख पाएंगे पेपर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। परीक्षाओं को लेकर हमेशा विवादों से घिरा रहने वाला कर्मचारी चयन मंडल (ईएसबी) नए साल से विभिन्न भर्ती और चयन परीक्षाओं की व्यवस्था में बदलाव करने जा रहा है। अब प्रश्न बैंक देने वाली, सिक्योरिटी और परीक्षा आयोजित करने वाली सभी फर्म अलगङ्कअलग होंगी। साथ ही ऑनलाइन मोड पर होने वाली परीक्षाओं में परीक्षार्थी द्वारा की जाने वाली माउस एक्टिविटी को भी वॉच किया जाएगा। किसी ने प्रश्न पत्र औसत समय से पहले कर लिया या परीक्षा के बिल्कुल अंत

में ही सभी प्रश्नों के उत्तर दिए तो दोबारा चेकिंग की जा सकती है।

इसके माध्यम से यह भी देखा जाएगा कि परीक्षार्थी की गतिविधि ऐसी तो नहीं थी कि उसने उसे हल करने में ऐसी तकनीक का उपयोग किया है, जो प्रतिबंधित है। ईएसबी की परीक्षाओं में अब तक जो एजेंसी परीक्षा आयोजित करती थी, वही सिक्योरिटी का काम भी करती थी। यानी साइबर सिक्योरिटी, जैमर, सीसीटीवी और अन्य सुरक्षा एक ही फर्म के हवाले होती थी। लेकिन, अब परीक्षा अलग फर्म लेगी और सिक्योरिटी दूसरी फर्म संभालेगी। इससे सभी की अकाउंटिबिलिटी तय होगी। बेंगलुरू की कंपनी मेटाआई विभिन्न परीक्षाओं के लिए सवाल देगी। परीक्षार्थियों को रेंडमली पेपर मिलेगा। ईएसबी के उच्च अधिकारी भी इसे केवल परीक्षा शुरू होने के 5 मिनट पहले ही देख सकेंगे। सिक्योरिटी का काम नोएडा की इनोवेटिव व्यू कंपनी देखेगी। कौन सी एजेंसी एग्जाम कंडक्ट करेगी, यह भी तय हो चुका है। विशेषज्ञ बोले- जवाबदेही जरूरी... साइबर एक्सपर्ट शोभित चतुर्वेदी कहते हैं, इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण मॉनिटरिंग है। कौन क्या करेगा और विवाद होने पर किसकी जिम्मेदारी होगी यह तय होना चाहिए।

टीवी कलाकार ऐश्वर्या खरे सहित 44 प्रतिभाओं का समान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कायस्थम संस्था भोपाल द्वारा शुक्रवार को रविन्द्र भवन में आयोजित कायस्थम-2025 में गीत-संगीत, नृत्य और विभिन्न राज्यों के परिधानों के साथ भारतीय संस्कृति की रंग बिरंगी छटा बिखरी। मुंबई से आई भोपाल की बेटी एवं टीवी कलाकार ऐश्वर्या खरे ने भी कायस्थ महिलाओं की परिधानम प्रतियोगिता में भाग लिया। ऐश्वर्या को संस्था ने कायस्थम (कायस्थ गौरव) सम्मान से सम्मानित किया। आयोजन में 13 विभिन्न कैटेगरी में 44 कायस्थ प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। कायस्थ समाज के गायक अजय सक्सेना, राकेश रायजादा, योगेंद्र श्रीवास्तव, अर्चना खरे, आश्वस्ति सक्सेना ने सदाबहार फिल्मी गीत और बुंदेली लोकगीत प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त नृत्यांगना डॉ. मोहिका सक्सेना, नंदा खरे, गार्गी श्रीवास्तव और शिवानी श्रीवास्तव ने भरतनाट्यम एवं कथक नृत्य की प्रस्तुतियां दीं। राज्यों के परिधान से संबंधित परिधानम प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें कायस्थ प्रतिभागी महिलाओं ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं कायस्थम के संरक्षक महेश श्रीवास्तव ने की। राज्य निर्वाचन आयोग के आयुक्त मनोज श्रीवास्तव, पूर्व सांसद आलोक संजर, पूर्व विधायक शैलेंद्र प्रधान, भोपाल नगर निगम के पूर्व आयुक्त देवीसरन और ऐश्वर्या खरे विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। यहां महेश श्रीवास्तव ने कहा कि कायस्थ प्रतिभाओं के पास बौद्धिक शक्ति तो है ही कलम की ताकत

भी है। कलम की शक्ति का उपयोग समाजहित में अवश्य करें। पूर्व आईएएस मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि श्री चतुर्भुज की सतर्कता, विजिलेंस का काम करते हैं। चित्रगुप्त जी का कार्य सूक्ष्म दृष्टि से युक्त है। उन्होंने भगवान श्री चित्रगुप्त की विस्तृत व्याख्या करते हुए बताया कि हमारे कार्यों का लेखा-जोखा श्री चित्रगुप्त जी रखते हैं। पाप पुण्य का निराकरण भी करते हैं। उनके व्यक्तित्व के अनुरूप हमें अपना दायित्व निभाना चाहिए। पूर्व सांसद आलोक संजर ने कहा कि अगर हम प्रतिभा का सम्मान करेंगे तो स्वयं भी सम्मानित होंगे।

श्रीवास्तव ने कायस्थ समाज को प्रेम और आपसी सद्भाव का सागर बताया। ऐश्वर्या खरे ने कहा कि मुझे कायस्थम परिवार ने जो सम्मान दिया, उसके लिए मैं आभारी हूं। मेरी शिक्षा दीक्षा भोपाल से हुई है और मुंबई में हम भोपाल का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐश्वर्या ने कायस्थ समाज को प्रतिभाशाली समाज बताया। इस अवसर पर उन्होंने संस्था की सदस्यता भी लेने की घोषणा भी की। अतिथियों ने कायस्थम भोपाल मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित पत्रिका कायस्थ दर्पण का लोकार्पण भी किया।

कार्यक्रम की शुरूआत में कायस्थम के अध्यक्ष प्रलय श्रीवास्तव ने संस्था की गतिविधियों, उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समाज में वैचारिक गतिशीलता लाने, बौद्धिक चिंतन और मनन के लिए संस्था का गठन किया गया है। समाज की उभरती हुई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की कार्ययोजना की जानकारी भी दी।

उप मुख्यमंत्री ने किया सीधी हॉस्पिटल में 96 स्लाइस सीमेन्स सीटी स्कैन का शुभारंभ

प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं और उच्च स्तर की शिक्षा विकास का अंतिम लक्ष्य है : उप मुख्यमंत्री

विकासखण्ड स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं का होगा विस्तार : उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं तथा उच्च स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराना ही विकास का अंतिम लक्ष्य है। प्रधानमंत्री की आयुष्मान भारत योजना देश के नागरिकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। आज देश के 55 करोड़ से अधिक नागरिकों को इस योजना के माध्यम से शासकीय एवं निजी चिकित्सालयों में 5 लाख रूपये तक की निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हो रही हैं।

प्रधानमंत्री ने इस योजना का विस्तार करते हुए देश के 70 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को सम्मिलित किया है। अब देश के 6.5 करोड़ 70 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों के इलाज की पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से प्रधानमंत्री ने देश के गरीब से गरीब व्यक्ति की पहुंच उत्कृष्ट निजी चिकित्सालयों तक सहज कर दी है। इससे निजी क्षेत्र के चिकित्सालयों को भी लाभ प्राप्त हो रहा है। उप मुख्यमंत्री ने उक्त बांते सीधी हास्पिटल में 96 स्लाइस सीमेन्स सीटी स्कैन एवं नर्सिंग केन्द्र, नेचुरापैथी, आयुर्वेदा का शिलान्यास एवं शुभारंभ के अवसर पर कही। उन्होने स्वास्थ्य के क्षेत्र में सीधी हास्पिटल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के प्रयासों से प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं में लगातार विस्तार हो रहा है। आने वाले समय में प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग में 35 हजार नए पदों की भर्ती होगी जिसमें 3 हजार चिकित्सक एवं 3 हजार पैरामेडिकल स्टाफसम्मिलित हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला चिकित्सालयों के साथ-साथ विकासखण्ड स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार होगा। विकासखण्ड स्तर पर सर्वसुविधा युक्त डॉक्टर कालोनी बनाई जावेगी जिसका लाभ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ चिकित्सकों को मिलेगा। विकासखंड स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से जिला चिकित्सालय में दबाव कम होगा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री ने अगले 5 वर्षों में देश में 75 हजार नए डॉक्टर बनाने का लक्ष्य दिया है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश में मेडिकल कालेजों के माध्यम से 8 हजार डॉक्टर प्रतिवर्ष निकले।

उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी विकास के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। आने वाले समय में पूरे विन्ध्य क्षेत्र का विकास तेजी से होगा। हमारा भविष्य स्वर्णिम है। सीधी जिला इस विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जून 2025 तक रेवांचल रीवा नहीं बल्कि सीधी तक आएगी। सीधी-सिंगरौली 4 लेन हाइवे का कार्य प्राथमिकता से पूर्ण किया जा रहा है। रेल एवं रोड कनेक्टिविटी बढ़ने से सीधी विकास की रफ्तार पकड़ेगी। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल कहते थे कि विकास करना है तो धरती से दौलत पैदा करनी होगी। सिंचाई सुविधाओं में विस्तार के लिए नदी जोड़ो का जो सपना अटल ने देखा था उसे हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूरा कर रहे हैं। सीतापुर हनुमना माइक्रो इरिगेशन तथा गोंड परियोजना से जिले में नहरों का जाल बिछेगा जिससे 86 हजार हेक्टेयर सिंचाई सुविधा का विस्तार होगा। किसानों की क्रय शक्ति बढ़ेगी जिससे क्षेत्र का उत्तरोत्तर विकास होगा। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब हमें तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के लिए प्रयास करना होगा।

विधायक सीधी रीती पाठक ने उप मुख्यमंत्री का जिले की स्वास्थ्य सुविधाओं विशेष कर जिला चिकित्सालय की व्यवस्था को सुदृढ़ करने की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उपमुख्यमंत्री ने जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए आश्वस्त किया है।

इस अवसर पर विधायक सिहावल विश्वामित्र पाठक, धौहनी कुंवर सिंह टेकाम, पूर्व मंत्री कमलेश्वर द्विवेदी, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष चिंतामणि तिवारी, देव कुमार सिंह चौहान, सीधी हास्पिटल से डॉ. एच. के. तिवारी, डॉ. आर. के. तिवारी, डॉ. डी. के. तिवारी, डॉ. प्रभावती तिवारी सहित गणमान्य नागरिक, वरिष्ठ चिकित्सक एवं समाजसेवी उपस्थित रहे।

कोर्ट में गवाही देने जाने के दौरान युवक पर फायरिंग

चार लोगों पर एफआईआर, आरोपियों के परिजन ने एसपी कार्यालय में की शिकायत

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के पिड़पा गांव में फायरिंग मामले ने एक नया मोड़ ले लिया है। शनिवार को करीब तीन दर्जन ग्रामीणों ने एसपी कार्यालय में शिकायती आवेदन देकर मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

दरअसल, शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के निवारी के रहने वाले पुष्पेंद्र सिंह खमरी गांव के पास से गुजर रहे थे। उनका आरोप है कि बाइक सवार चार लोगों ने उन पर तीन गोलियां चलाईं। पुष्पेंद्र ने गढ़ीमलहरा थाना पुलिस को सूचित किया, जिसके बाद उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुष्पेंद्र का आरोप है कि लोकेंद्र यादव, गोपाल यादव, अरविंद यादव और सचिन यादव ने एक पुराने हत्या केस में गवाही न देने के लिए उन पर हमला किया।

3 साल पुराना हत्या का मामला: इस मामले में आरोपियों के परिवार ने शनिवार को एसपी कार्यालय पहुंचकर शिकायत की। आरोपी के परिवार के सदस्य रश्मि यादव का कहना है कि पुष्पेंद्र ने खुद को गोली मारी है और उनके परिवार के चार लोगों को झूठे केस में फंसाया जा रहा है। तीन साल पहले साहब राजा और राणा राजा ने उनके भाई महेश यादव की हत्या की थी और अब राजीनामे के लिए यह साजिश रची गई है।

मृतक की पत्नी मीना यादव ने बताया कि 3 साल पहले पति की हत्या की थी। इसी केस में कल हमारे देवर और लड़का न्यायालय में बयान देने के लिए आए थे, इस दौरान पुष्पेंद्र ने खुद को गोली मार ली और हमारे लड़के लोकेंद्र ओर देवर गोपाल को झूठे केस में फंसा दिया है।

सड़क चौड़ीकरण में बाधक मकान पर चला बुलडोजर

मालिक का दावा- कोर्ट से स्टे था, अफसर बोले- कोर्ट की अनुमति के बाद कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना में पहाड़ीखेड़ा मार्ग के चौड़ीकरण के लिए शनिवार को नगरपालिका ने मकान के अतिक्रमण वाले हिस्से को ढहा दिया। इस दौरान मकान मालिक और कर्मचारियों के बीच बहस भी हुई।

पिछले दो महीने से सड़क के दोनों ओर बने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। प्रशासन ने पहले ही सभी चिह्नित मकानों को नोटिस जारी कर अतिक्रमण हटाने की चेतावनी दी थी। अधिकतर लोगों ने हटा लिया, लेकिन महेंद्र गुप्ता ने ऐसा नहीं किया।

मकान मालिक के बेटे दिनेश गुप्ता का आरोप है कि उनके पास कोर्ट से स्टे आदेश था, लेकिन नगरपालिका ने नोटिस दिया था। उन्हें सामान हटाने का भी मौका नहीं दिया गया, जिससे उन्हें नुकसान हुआ है।

दूसरी ओर, नगरपालिका के सीएमओ शशि कपूर गढ़पाले का कहना है कि मकान के अतिक्रमित हिस्से को गिराने की अनुमति कोर्ट से मिली थी। कोर्ट के आदेश पर ही यह कार्रवाई की गई है। यह कार्रवाई पन्ना-पहाड़ीखेड़ा मार्ग के चौड़ीकरण प्रोजेक्ट का हिस्सा है, जिसके तहत दो महीने पहले अजयगढ़ चौराहे से भी अतिक्रमण हटाया गया था।

अमरकंटक में 3-5 फरवरी तक नर्मदा महोत्सव

बनारस के पंडित करेंगे महाआरती, योगाभ्यास से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर के अमरकंटक में तीन दिवसीय नर्मदा महोत्सव की तैयारियों को लेकर कलेक्टर हर्षल पंचोली ने समीक्षा बैठक की। अमरकंटक में आगामी 3-5 फरवरी तक चलने वाले इस महोत्सव को भव्य बनाने की योजना है। कलेक्टर ने बताया कि महोत्सव में प्रतिदिन योगाभ्यास का आयोजन होगा। कार्यक्रम की विशेष आकर्षण बनारस के पंडितों द्वारा की जाने वाली महाआरती होगी।

इस दौरान साधु-संतों का विशेष सम्मान भी किया जाएगा। स्थानीय लोगों और कलाकारों को भी महोत्सव से जोड़ा जाएगा, जिससे कार्यक्रम और भी यादगार बन सके। महोत्सव में शोभायात्रा, लेजर लाइट शो, साउंड शो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी।

इसके अलावा कन्या पूजन और कन्या भोज का भी आयोजन किया जाएगा। अलग-अलग विभागों की ओर से स्टॉल लगाए जाएंगे और एडवेंचर और ट्रैकिंग गतिविधियां भी आयोजित की जाएंगी। कलेक्टर ने अमरकंटक की साफ-सफाई और अन्य व्यवस्थाओं के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

आभार रैली से नदारद रहे दावेदार

सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने नवनियुक्त जिला अध्यक्ष सुंदर शाह का किया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली में शनिवार को भाजपा के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष सुंदर शाह की आभार रैली हुई। लेकिन इस दौरान जिला अध्यक्ष पद के अन्य दावेदारों रैली में अनुपस्थिति रहे। मोरवा स्थित शिव मंदिर से शुरू हुई रैली में सैकड़ों वाहनों का काफिला शामिल रहा। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष शीर्ष कांति देव सिंह, नगर निगम स्पीकर देवेश पांडे और युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष खुली गाड़ी में सवार होकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरे।

कार्यालय पर सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह, देवसर विधायक राजेंद्र मेश्राम और पूर्व विधायक सुभाष वर्मा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। नए जिला अध्यक्ष सुंदर शाह ने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर संगठन को मजबूत करने और सत्ता-संगठन में संतुलन बनाने का वादा किया।

लाठी से पीट-पीटकर बड़े भाई की हत्या

शहडोल में गाली-गलौज करने पर हुआ विवाद, आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के जोधपुर के जमुनिहा टोला में युवक ने अपने ही बड़े भाई की लाठी से पीट-पीटकर हत्या कर दी। वारदात शुक्रवार रात करीब 11:30 बजे की है। दोनों के बीच गाली-गलौज को लेकर विवाद हुआ था।

पुलिस के अनुसार बुद्ध कोल (60) और उनके छोटे भाई सुखना कोल के घर एक-दूसरे से सटे हुए हैं। रात में बुद्ध कोल गाली-गलौज कर रहे थे, जिस पर सुखना ने मना किया। बुद्ध नहीं माने, जिससे दोनों भाइयों के बीच विवाद होने लगा। इस दौरान सुखना घर से लाठी लेकर आया और बुद्ध को पीटना शुरू कर दिया। बुद्ध की पत्नी रामकली कोल ने बीच-बचाव की कोशिश की, लेकिन दोनों नहीं माने।

रामकली ने पुलिस को सूचना दी। सिंहपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। हालांकि आरोपी सुखना कोल घटना के बाद फरार हो गया था, लेकिन पुलिस ने कुछ ही घंटों में गिरफ्तार कर लिया।

एएसपी अभिषेक दीवान ने बताया कि आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है। जांच की जा रही है।

राई नृत्य के साथ बूढ़ाबांध मेले का समापन

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के बूढ़ाबांध में चल रहा 5 दिवसीय मेला शनिवार को समाप्त हो गया। यह मेला पिछले 82 वर्षों से आयोजित किया जा रहा है। 14 जनवरी से शुरू हुआ यह मेला 18 जनवरी को बुंदेली संस्कृति की धूम के साथ समाप्त हुआ।

कार्यक्रम में अंजली कुशवाहा ने अपने शानदार नृत्य प्रदर्शन से दर्शकों का मन मोह लिया। वहीं परशुराम अवस्थी ने अपने बुंदेली गायन से समां बांध दिया। ग्रामीण क्षेत्रों से आए दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ दोनों कलाकारों का स्वागत किया और कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

मेला समिति के प्रमुख रामप्रसाद मिश्रा ने श्रीफल और प्रशस्ति पत्र देकर दोनों को सम्मानित उनके साथ स्थानीय महिलाओं ने भी राई नृत्य में भाग लिया।

हीरामणि मिश्र भानु के प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय किसान यूनियन (भानु) की केन्द्रीय इकाई ने रीवा के हीरामणि मिश्र को मध्य प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस नियुक्त पर यूनियन के सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया है। वहीं हीरामणि ने इस जिम्मेदारी के लिये संगठन के प्रति आभार व्यक्त किया है। साथ ही उन्होंने कहा है कि वो इस दायित्व को पूरी निष्ठा व इमानदारी से निभायेंगे।

ताईक्वांडो प्रतियोगिता में शामिल हुए 45 बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप)के आयाम खेलो भारत द्वारा रीवा में ताईक्वांडो(पुरुष /महिला) प्रतियोगिता का आयोजन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हुआ, अभाविप द्वारा समर्थित ताईक्वांडो (पुरुष/महिला वर्ग) प्रतियोगिता में कुल 45 बच्चों (जूनियर-सीनियर) के शामिल हुए।

टूर्नामेंट का कार्यक्रम: प्रत्येक प्रतिभागी के वजन के आधार पर प्रतियोगिता आयोजित की गई, प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में प्रथम स्थान सोना सोंधीया, द्वितीय स्थान खुशबू गुप्ता,बालक वर्ग में आकाश पटेल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया,प्रतीक पाण्डेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, 42किलो ग्राम में जय प्रकाश पाठक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, अनिरुद्ध मिश्र ने द्वितीय, शिवा कुशवाहा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, 48किलो ग्राम में प्रांशु कोरी ने प्रथम, अंश गुप्ता ने द्वितीय, शिवा गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, 54 किलोग्राम में विशाल पाण्डेय ने प्रथम, आरुषि सेन ने द्वितीय, आरुष सेन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, 59किलोग्राम में करिश्मा शास्त्री ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । जिसमें प्रमुख रूप से अभाविप रीवा विभाग संगठन मंत्री प्रभात तिवारी, प्रांत खेलो भारत प्रमुख डॉ .संजीव कुमार मिश्रा, जिला खेलो भारत संयोजक मुदित सिंह गहरवार,भाग संयोजक पवन द्विवेदी, नगर मंत्री हर्ष साहू, ऋषभ तिवारी, श्रेया तिवारी एवं अन्य गणमान्य कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

स्वामित्व योजना के तहत 1153 हितग्राहियों को अधिकार अभिलेख का किया गया वितरण

सांसद, विधायक सीधी एवं सिहावल ने वितरित किए अधिकार अभिलेख

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वार स्वामित्व योजना के तहत देशभर के लगभग 50 हजार गावों में 58 लाख प्रापर्टी कार्ड का वर्चुअली वितरण किया गया। साथ ही योजना के लाभार्थी कार्ड धारकों के साथ संवाद भी किया गया। सीधी जिले में 92 गांवों के 1153 हितग्राहियों को अधिकार अभिलेख का वितरण किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम सांसद डॉ राजेश मिश्रा, विधायक सीधी रीती पाठक, सिहावल विश्वामित्र पाठक, जिला पंचायत अध्यक्ष मंजू सिंह, जनपद अध्यक्ष सीधी धर्मेन्द्र सिंह परिहार, मझौली सुनैना सिंह, कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा उपस्थित हितग्राहियों को स्वामित्व योजना के तहत अधिकार अभिलेख का वितरण किया गया।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री द्वारा स्वामित्व योजना की शुरुआत दिनांक 20 अप्रैल 2020 से गांवों में बसे हुए क्षेत्रों में घरों के मालिक परिवारों को सर्वेक्षण से संबंधित आधुनिकतम ड्रोन तकनीक के माध्यम से अधिकारों का रिकॉर्ड प्रदान करके ग्रामीण भारत की आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाने की दृष्टि से की गई। सीधी जिला अन्तर्गत स्वामित्व योजना में कुल 486 ग्रामों में ड्रोन फ्लाई का कार्य किया गया है, जिसमें 12 मार्च 2024 के पूर्व 166 ग्रामों में 1775 लाभार्थियों को इस योजना का लाभ प्रदाय किया जा चुका है एवं 12 मार्च 2024 के बाद आज 18 जनवरी 2025 को 92 ग्रामों में 1153 लाभार्थियों को इस योजना का लाभ प्रदाय किया जा रहा है। शेष 228 ग्रामों का कार्य प्रचलन में है।

आज के कार्यक्रम में 12 मार्च 2024 के बाद तैयार 92 गांवो के 1153 भू अधिकार पत्रों का वितरण किया गया। तहसील कुसमी के 4 ग्रामों के 22 हितग्राही, गोपद बनास के 12 गांवों के 60, चुरहट के 7 गांवों के 137, मझौली के 46 गांवों के 235, रामपुर नैकिन के 13 गांवों के 607 तथा सिहावल के 10 गांवों के 92 हितग्राहियों को भू-अधिकारी पत्र का वितरण किया गया।

कार्यक्रम में देव कुमार सिंह चौहान, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सीधी अशोक तिवारी सहित संबंधित विभागीय अधिकारी एवं हितग्राही उपस्थित रहें।

पारंपरिक खेलो को बढ़ावा देने की पहल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आयाम खेलो भारत द्वारा अयोजित नगर खेल महाकुंभ प्रतियोगिता में वॉली बॉल के मुकाबले हुए इसमें 6 टीमें शामिल हुई विभाग संयोजक कमल नयन तिवारी ने बताया कि खेलो भारत अभियान के तहत यह आयोजन पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को मंच देने का प्रयास है यह कदम देश को एक महान खेल राष्ट्र बनाने में सहायक होगा।

डॉक्टर ए पी सिंह ने कहा कि खेल महाकुंभ युवाओं को खेलों के प्रति प्रेरित करेगा यह शारीरिक फिटनेस के अलावा अनुशासन और सहन शीलता के विकास होगा यह छात्रों को उनके खेल कौशल को पहचानने और निखारने का बेहतरीन अवसर प्रदान करेगा जिसमें मुख्य रूप से डॉक्टर ए पी सिंह गहरवार रीवा विभाग के विभाग संयोजक कमल नयन तिवारी जिला संयोजक सुंदरम मिश्रा दीपक मिश्रा भाग संयोजक मनीष साहू नगर मंत्री दीपांशु पटेल नगर क्रीडा प्रमुख ओमप्रकाश तिवारी रविंद्र सिंह कामता जायसवाल कान्हा प्यासी रवि मिश्रा सुभाष कुशवाहा लवकुश कुमार साकेत उपस्थित रहे।

विचार

सैफ अली खान पर हमले के बाद महाराष्ट्र में सियासत गरमाई

सड़क दुर्घटनाओं पर काबू न पाए जा सकने को लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री की चिंता वाजिब है। इसके लिए वे खराब सड़क निर्माण को जिम्मेदार मानते हैं। संसद में भी उन्होंने कहा था कि विदेश में जब भी भारत में सड़क दुर्घटनाओं और सड़कों के निर्माण को लेकर बात होती है, तो उन्हें शर्म से मुंह छिपाना पड़ता है। अभी भारतीय उद्योग परिसंघ की तरफ से आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं के मामले में भारत दुनिया में पहले स्थान पर है। इसका बड़ा कारण सड़कों का खराब ढंग से निर्माण किया जाना है।

उन्होंने कहा कि खराब सड़क निर्माण को गैर-जमानती अपराध बना दिया जाना चाहिए। सड़क निर्माण के ठेकेदारों और इंजीनियरों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। निस्संदेह यह सुझाव कठोर लग सकता है। मगर चूंकि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने संकल्प लिया है कि वह 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को घटा कर आधा कर देगा, बिना ऐसे कठोर कदम उठाए उसका लक्ष्य तक पहुंचना आसान नहीं होगा। मंत्रालय के अनुसार 2023 में पांच लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें से एक लाख बहत्तर हजार लोगों की मौत हो गई। इनमें से एक लाख चौदह हजार लोगों की उम्र अठारह से पैंतालीस वर्ष के बीच थी। सड़क दुर्घटनाओं पर काबू पाने के लिए कई उपाय आजमाए जा चुके हैं। यातायात नियमों के उल्लंघन पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया। जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। मगर इसका कोई उल्लेखनीय असर नजर नहीं आया। सड़क दुर्घटनाएं हर वर्ष कुछ बढ़ी हुई ही दर्ज होती हैं। सड़क दुर्घटनाओं में मौत का सबसे बड़ा कारण सड़कों का खराब ढंग से निर्माण चिह्नित किया गया है। राजमार्गों और द्रुतगामी सड़कों पर चौड़ाई आदि में एकरूपता और मोड़ों पर उचित तकनीक का इस्तेमाल न होने के कारण दुर्घटनाएं और मौतें अधिक होती हैं।

अच्छी बात है कि परिवहन मंत्री ने इस बात की पहचान की और इसे स्वीकार भी किया। सड़कों पर जिन वजहों से दुर्घटनाएं और मौतें होती हैं, उन्हें दूर करने के लिए भारी रकम भी आबंटित की गई है।

मेटा की माफी से सोशल मीडिया मंचों को सख्त सन्देश

ललित गर्ग

फेसबुक के लिये भारत एक संभावनाओं भरा बड़ा बाजार होने के बावजूद उसकी भारत के प्रति सोच भ्रामक, विवादास्पद एवं नकारात्मक रही है। फेसबुक और मेटा भारत के तथ्यों के साथ छेड़छाड़ और फेकन्यूज को लेकर विवादों में घिरती रही हैं। हाल ही में मेटा के सीईओ मार्क जकरबर्ग एक बार फिर भारत को लेकर दिये गलत बयान के मामले में फंस गए हैं। जुकरबर्ग ने एक पॉडकास्ट में कहा था कि कोरोना के बाद दुनिया के कई देशों में मौजूदा सरकारें गिर गईं। भारत के लोकसभा चुनाव में भी नरेन्द्र मोदी सरकार हार गई। यह जनता का सरकारों में घटता भरोसा दिखाता है।

इस बयान के बाद संसद की आईटी एंड कम्युनिकेशन मामलों की स्टैंडिंग कमिटी के अध्यक्ष और भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा था कि इस गलत बयान पर कंपनी को माफी मांगनी चाहिए। वरना हमारी समिति उन्हें मानहानि का नोटिस भेजेगी। भारत सरकार की सख्त आपत्ति को देखते हुए भले ही मेटा ने माफी मांग ली हो, लेकिन मार्क भरोसे के लायक नहीं है। यह माफी जहां जरूरी थी वही अब स्वागतयोग्य भी है। लेकिन मार्क का भारत के प्रति नजरिया गैर जिम्मेदाराना, लापरवाहीपूर्ण एवं दोषपूर्ण है। ऐसी निरंकुश सोच एवं उच्छृंखल मानसिकता की बुनियाद पर संबंधों की खड़ी होने वाली इमारत खोखली एवं विनाशकारी ही होती है।

यह वाकई हैरत की बात है कि जुकरबर्ग ने भारत को भी उन देशों में शामिल कर लिया जहां पिछले साल चुनाव में सरकारों ने सत्ता गंवाई। तथ्य यह है कि भाजपा की सीटें भले कम हुई हों, लेकिन सत्तारूढ़ गठबंधन एनडीए ने बहुमत हासिल कर सरकार में वापसी की एवं सफलतापूर्वक सरकार को चला रही है। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बने और न केवल देश में बल्कि दुनिया में भारत का परचम फहरा रहे है। इस तथ्य से जकरबर्ग कैसे अनजान हो सकते हैं? क्या वह जानबूझकर भारत सरकार के बारे में गलत सूचनाएं फैला रहे हैं? क्या यह शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्रों के साथ-साथ वहां की बड़ी आर्थिक शक्तियों की भारत के प्रति विरोधाभासी दुर्भावना नहीं है। कैसे मान लिया जाये कि यह गलती अनजाने में हुई है? क्या दुनिया के सबसे बड़े सोशल मीडिया मंच फेसबुक को संभालने वाली इतनी बड़ी कंपनी के मालिक से ऐसी गलती की उम्मीद की जा सकती है और ऐसी गलती उनको शोभा देती है कि वह भारत जैसे देश के चुनाव परिणाम से परिचित न हों? अगर यह गलती जुकरबर्ग से भूल या अनजाने में हुई है, तो भी यह गंभीर बात है। मेटा इंडिया भी जुकरबर्ग की ही कंपनी है, जिसके एक आला अधिकारी ने कहा है कि अमेरिकी बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी समूह मेटा के लिए भारत एक अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण एवं संभावनाभरा खास देश बना हुआ है। मेटा अपने व्यापार को भारत में विस्तारित करने के लिये विभिन्न योजनाओं पर काम भी कर रहा है। भारत मेटा के लिए बहुत अहम देश है। फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सएप की पेरेंट कंपनी मेटा चेन्नई में रिलायंस इंडस्ट्रीज के कैंपस में भारत में अपना पहला डेटा सेंटर स्थापित कर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, मार्च 2024 में जामनगर में हुए बिजनेसमैन मुकेश अंबानी के छोटे बेटे अनंत अंबानी की प्री वेडिंग फंक्शन में जुकरबर्ग शामिल हुए थे। तभी उन्होंने रिलायंस के साथ इसको लेकर एक समझौता किया था। इस तरह मेटा के लिए भारत अहम है, तो इसके मालिक को भारत का नाम बहुत संभलकर एवं सोच समझकर लेना चाहिए। वैसे भी भारत सरकार अमेरिका, यूरोपीय देशों या चीन की तरह आक्रामक एवं उग्र नहीं है। आक्रामक देशों में तो सरकारें फेसबुक या मेटा की गलतियों पर उसे न केवल सबक सीखाती है बल्कि कई बार ऐसी गलतियों के चलते कंपनियों को भारी जुर्माना भी चुकाना पड़ता है। उन देशों की कड़ाई का ही नतीजा है कि सोशल मीडिया कंपनियां इन देशों में बहुत सजग रहती हैं, जबकि भारत के मामले में उनकी नीति बदल जाती है। भारत की उदारता का ये कंपनियां अधिकतम दुरुपयोग करना चाहती हैं। भारत को भी उदारता, सरलता एवं लचीलेपन की जगह कठोर एवं सख्त रवैया अपनाना चाहिए क्योंकि भारत अब दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने के साथ दुनिया में अपनी एक स्वतंत्र एवं ठोस जगह बना चुका है। जुकरबर्ग से जुड़ा यह ताजा मामला ऐसे ही लोगों के लिये एक सबक एवं चेतावनी बनना चाहिए। भारत सरकार को चाहिए कि वह ऐसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मालिकों और अधिकारियों को चेतावनी के शब्दों में सचेत कर दे कि वे भारत के महत्व को समझें, पर्याप्त सजग एवं सावधान रहें। भारतीयों को पता है कि साल 2019 में अमेरिका में फेडरल ट्रेड कमीशन ने उपयोगकर्ता की गोपनीयता का उल्लंघन करने के लिए फेसबुक पर पांच अरब डॉलर का जुर्माना लगाया था।

मेटा प्रमुख मार्क के भ्रामक एवं गुमराह करने वाले बयान पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भी प्रतिक्रिया दी और इसे गलत जानकारी करार देते हुए तथ्य और विश्वसनीयता बनाए रखने का आह्वान किया। मेटा के पब्लिक पॉलिसी के वाइस प्रेसिडेंट, शिवनाथ ठुकराल ने अश्विनी वैष्णव के पोस्ट पर जवाब देते हुए लिखा, मार्क जुकरबर्ग का यह कहना कि 2024 के चुनावों में कई देशों में सत्ताधारी पार्टियां फिर से नहीं चुनी गईं, कई देशों के लिए सही है, लेकिन भारत के लिए नहीं। हम इस अनजाने में हुई गलती के लिए माफी मांगते हैं। भारत मेटा के लिए बेहद महत्वपूर्ण देश है और हम इसके इनोवेशन से भरे भविष्य का हिस्सा बनने के लिए उत्साहित हैं। भारत को अपना बाजार मानने वाले मेटा के लिये ऐसी भूल अनायास या जानबूझकर जैसे भी हो, होना दुर्भाग्यपूर्ण है। क्योंकि भारत जैसे सशक्त एवं ताकतवर लोकतांत्रिक देश के लिये गलत जानकारी प्रसारित करना देश की छवि को धूमिल करती है। यह तो भारत की उदारता, सहिष्णुता एवं भलमनसाहत है कि उसने ऐसी अक्षम्य गलती पर भी माफी से संतोष कर लिया, वरना भारी जुर्माना या अन्य कठोर सजा के प्रावधान हो सकते थे। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया मंचों का इस्तेमाल सिर्फ अधिक से अधिक मुनाफा हासिल करने के मकसद से हो रहा है। लेकिन इसके लिये समाज को नुकसान पहुंचाना कैसे जायज हो सकता है? इस तरह की गैर जिम्मेदारी एवं लापरवाही खतरनाक हो सकती है और इसकी इजाजत नहीं दी जा सकती। ताजा विवाद को सरकार ने गंभीरता से लिया है, यह अच्छी बात है। लेकिन जरूरी है कि चिंता इसी मामले तक सीमित न रहे। हेट स्पीच, तथ्यों को तरोड़मरोड़ कर प्रस्तुत करना और फेक न्यूज के ऐसे अन्य मामले भी राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिये गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण है। सरकार की सख्ती जहां मेटा को ज्यादा जिम्मेदार बनाये वहीं अन्य मंचों के लिये भी सबक बने।

माफी के बाद जुकरबर्ग जैसे मालिकों को भी यह सुनिश्चित होगा कि उनके अधीन चलने वाले सोशल मीडिया मंचों पर भारत के प्रति किसी झूठ, भ्रम एवं असत्य बयानी का सिक्का न चले। क्योंकि भारत की उदारता को उसकी कमजोरी मानने की मानसिकता घातक हो सकती है। भारत को लेकर कोई गलत सूचना संचारित-प्रसारित न हो, तथ्यों की प्रामाणिकता एवं सच्चाई को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मनगढ़ंत या झूठी सूचनाओं का प्रचार- संचार अब भारत के लिये सहनीय नहीं है। फेसबुक या अन्य सोशल मंचों पर बहुत सारी झूठी, भ्रामक, विध्वंसक या फर्जी सूचनाएं समय-समय पर घूमती रहती हैं, जिससे भारत की राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द, इंसानी सद्भावना आहत होती रही है। भारत के कतिपय राजनीतिक दल इसके लिये ऐसे मंचों को प्रोत्साहन भी देते हैं लेकिन इन सब स्थितियों के बावजूद भारत को मजबूती से इनके खिलाफ खड़े होकर उनको उनकी जमीन दिखाना ही चाहिए। ऐसी सख्ती ही भारत की छवि को मजबूती प्रदान करेंगी एवं तभी दुबारा ऐसा दुस्साहस करने की कोई चेष्टा नहीं करेगा।

सत्ता की बैसाखी पर टिके होने से बदल जाते हैं नेताओं के सुर

योगेंद्र योगी

बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर आंदोलित प्रदेश के युवाओं की मांग पर भारतीय जनता पार्टी की चुप्पी आश्चर्यजनक नहीं है। दरअसल भाजपा न सिर्फ बिहार नीतिश सरकार में शामिल है, बल्कि केंद्र में भी उसी की बैसाखियों पर टिकी है। ऐसे में मुद्दा जनहित का हो या न हो, इससे भाजपा को फर्क नहीं पड़ता। इससे पार्टी के उसूलों पर भी आंच नहीं आती। इसी भाजपा ने राजस्थान में कांग्रेस की अशोक गहलोत सरकार के खिलाफ पेपर लीक प्रकरणों में विरोध प्रदर्शनों में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। यह दोहरा चरित्र अकेले भाजपा का हो ऐसा नहीं है। जिस प्रदेश या केंद्र में जिस भी दल की सरकार होती है, वहां की सत्तारुढ़ पार्टी का रवैया ऐसा ही होता है। केंद्र में कांग्रेस शासन के दौरान सहयोगी दलों के घपले-घोटाले इसका प्रमाण रहे हैं। सत्ता के लिए गठबंधन की मजबूरी से ऐसा करना देश की राजनीति का चरित्र बन गया है। सत्ता में होने पर पार्टी को कुछ गलत नजर नहीं आता और विपक्ष में आते ही मुद्दे और तरीके बदल जाते हैं।

बिहार में 13 दिसंबर को विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर बीपीएससी की 70वीं पीटी परीक्षा आयोजित की गई थी। परीक्षा के दिन से ही अभ्यर्थी परीक्षा में गड़बड़ी का आरोप लगाकर इसे रद्द करके फिर से कराने की मांग की। अभ्यर्थियों ने आरोप लगाया कि पटना के बापू एग्जाम सेंटर पर छात्रों को पेपर देरी से मिला था और पेपर की सील पहले से खुली हुई थी। छात्र प्रदर्शनकारियों के पटना के गांधी मैदान से मुख्यमंत्री आवास की ओर मार्च करने पर पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज और वाटर कैनन का इस्तेमाल ने छात्रों और उनके संगठनों के आक्रोश को और बढ़ा दिया।

बिहार की तरह राजस्थान भी कांग्रेस शासन के दौरान पेपर लीक प्रकरणों के कारण सुर्खियों में रहा है। राजस्थान की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में हुई प्रतियोगिता परीक्षाओं में एक के बाद एक पेपर लीक के मामले सामने आए। सब इंस्पेक्टर भर्ती, सीएचओ भर्ती, लाइब्रेरियन भर्ती और वरिष्ठ अध्यापक भर्ती सहित कई परीक्षाओं के पेपर लीक होने के खुलासे हुए। राजस्थान लोक सेवा आयोग की ओर से व्याख्याता भर्ती 2022 की परीक्षा का पेपर लीक होने का मामला सामने आया। पेपर लीक मामले में उलझी सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2021 को लेकर प्रदेश के लाखों युवाओं में हर ताजा अपडेट का इंतजार है। पेपर लीक और डमी अभ्यर्थियों के जरिए सैंकड़ों युवाओं ने नौकरी हासिल कर ली थी। इस मामले की जांच करने वाली एसओजी ने भी व्यापक स्तर पर पेपर लीक होना माना और इस परीक्षा को रद्द करने की सिफारिश पुलिस मुख्यालय को भेजी थी। पुलिस मुख्यालय और मंत्रिमंडलीय उपसमिति ने भी परीक्षा को रद्द करने की सिफारिश की, लेकिन सरकार ने इस भर्ती परीक्षा को अभी तक रद्द नहीं किया।

राज्य सरकार ने एसआई भर्ती 2021 में चयनित सभी ट्रेनी सब इंस्पेक्टरों के आगामी प्रशिक्षण पर रोक लगा दी। सरकार ने यह निर्णय राजस्थान हाई कोर्ट के निर्देश के बाद लिया। एक साल की लंबी एक्सरसाइज में अभी तक 50 सब इंस्पेक्टर पकड़े गए हैं। आरपीएससी के सदस्य पकड़े गए। आश्चर्य की बात यह है कि राजस्थान में भाजपा सरकार केही एक केबीनेट मंत्री अपनी ही सरकार के

फैसलों पर सार्वजनिक रूप से सवाल उठा रहे हैं। कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा को रद्द करने की मांग कर रहे हैं, जबकि सत्तारुढ़ भाजपा अभी तक इस पर कोई फैसला नहीं कर सकी।

अनुशासित माने जानी वाली भाजपा की मजबूरी है कि मीणा के खिलाफ पार्टी और सरकार की लाइन से अलग हट कर चलने को लेकर कार्रवाई नहीं कर सकी। इसमें भाजपा को मीणा के साथ जुड़े मीणा वोट बैंक के खिसकने का डर है। सत्ता के लिए राजनीतिक दल किस हद तक उसूलों को ताक पर रख देते हैं, मीणा के खिलाफ कार्रवाई नहीं करना इसका उदाहरण है। मीणा मंत्री पद से इस्तीफा तक दे चुकें हैं, हालांकि उन्होंने इस्तीफा लोकसभा चुनाव में भाजपा के खराब प्रदर्शन पर अपनी जिम्मेदारी मानते हुए दिया था। पार्टी ने अनुसूचित जाति में कोई गलत संदेश नहीं जाए, इसलिए मीणा का इस्तीफा स्वीकार नहीं किया। वोट बैंक के लिए समझौते की ऐसी अनोखी मिसाल देश में शायद ही कहीं देखने को मिले, जहां एक नेता के मंत्रीपद से इस्तीफे को स्वीकार नहीं किया गया, बल्कि उसकी पार्टी विरोधी कार्रवाई झेलने को भी पार्टी मजबूर है। दरअसल ऐसे सार्वजनिक विवादित मुद्दों पर किसी भी सरकार के लिए फैसला लेना आसान नहीं होता। सरकारें एक तरफ जहां रोजगार देने के लिए अपनी छवि सुधारने में लगी होती हैं, वहीं दूसरी तरफ फिर से परीक्षा करवाने की कवायद खर्चीली और देरी करने वाली होती है। राज्यों में सत्तारुढ़ पार्टी के सामने समस्या यह भी होती है कि पेपर लीक होने से चुनिंदा लोगों को हुए फायदे के कारण परीक्षा रद्द करवाने से हजारों-लाखों अभ्यर्थियों के हितों का नुकसान नहीं किया जा सकता। ऐसे में सत्तारुढ़ दलों को दोनों तरफ से युवाओं की नाराजगी का खतरा होता है। यदि पेपर निरस्त करा दिया तो योग्यता सूची में आए अभ्यर्थियों की नाराजगी और नहीं कराया तो प्रदर्शनाकारियों की।

ऐसे हालात का विपक्षी दल फायदा उठाने से नहीं चूकते, जैसा कि बिहार के मामले में निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने किया। सांसद यादव को बिहार प्रशासनिक सेवा आयोग से नाराज प्रदर्शनकारी युवाओं की सहानुभूति का फायदा मिल गया। ठीक यही स्थिति राजस्थान में मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के साथ है। यहां सत्तारुढ़ पार्टी भाजपा के ही वरिष्ठ नेता और काबीना मंत्री मीणा अपनी ही सरकार और पार्टी को आईना दिखाने में लगे हुए हैं। इसके पीछे भी वोट बैंक की राजनीति है। मीणा ने पेपर लीक मामलों में पूर्ववर्ती गहलोत सरकार की नाक में दम कर दिया था। कांग्रेस के राजस्थान से सत्ता गंवाने का एक बड़ा कारण पेपर लीक मामले भी रहे हैं।

यह निश्चित है कि प्रतियोगी परीक्षाओं के राज्यों में होने वाले संचालन को सौ प्रतिशत चाक-चौबंद करना आसान नहीं है। कोई भी चूक और मिलीभगत पेपर लीक करवा सकती है। राजनीतिक दलों को रोटी सेकने के लिए ऐसे ही मौकों का इंतजार रहता है। यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा, जब तक राजनीतिक दल मिल बैठकर किसी नीति पर कायम नहीं होते। तब तक न सिर्फ युवाओं के हितों पर कुठाराघात होता रहेगा, बल्कि सरकारी संसाधन और धन का भी नुकसान होता रहेगा।

आरक्षकों ने गांजा बेचकर खरीदे घर और कार-बाइक

जीआरपी कॉन्स्टेबल की 1.50 करोड़ की संपत्ति जब्त, रिश्तेदारों के नाम पर प्रॉपर्टी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में गांजे का कारोबार करने वाले जीआरपी (गवर्नमेंट रेलवे पुलिस) के 3 बर्खास्त आरक्षकों की डेढ़ करोड़ की संपत्ति को पुलिस ने फाइनेंशियल इन्वेस्टिगेशन के बाद जब्त किया है। इनके नाम पर लग्जरी मकान, कार और महंगी बाइक मिले हैं। पुलिस ने इनकी संपत्ति जब्त कर केस को मुंबई सफेमा कोर्ट भेजा है।

एसपी रजनेश सिंह ने शुक्रवार की शाम बिलासागुड़ी में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आरक्षकों की संपत्ति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि, जीआरपी में पदस्थ लक्ष्मण गाइन, संतोष राठौर, मन्नू प्रजापति और सौरभ नागवंशी गांजे का कारोबार करते थे। चारों अभी जेल में बंद है।

20 किलो मिला था गांजा: 23 अक्टूबर को उनके साथी योगेश सोंधिया और रोहित द्विवेदी से 20 किलो गांजा जब्त किया था। दोनों के खिलाफ जीआरपी थाने में केस दर्ज किया गया। जांच में पाया गया कि, चारों आरक्षक अवैध कारोबार में शामिल है। वे ट्रेन में गांजा पकड़कर अपने सहयोगी योगेश उर्फ गुड्डू सोंधिया और श्यामधर उर्फ छोटू चौधरी को देते थे।

दोनों ट्रेन में ही पहले से बुलाए गए लोगों को गांजे की सप्लाई करते थे। जांच के बाद उनके खिलाफ चालान एनडीपीएस कोर्ट में पेश किया गया है। फाइनेंशियल इन्वेस्टिगेशन में उनके खिलाफ जांच के बाद जमीन, मकान और महंगी गाड़ियां मिली हैं। इसे जब्त कर सीज करने सफेमा कोर्ट मुंबई को प्रकरण भेजा गया है।

कई यूपीआई अकाउंट से डायरेक्ट लेनदेन मिला: एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि, आरक्षकों ने सीधे खातों में पैसे लेने के साथ ही यूपीआई से भी रुपए लिए हैं। आरक्षकों ने अपने और घर परिवार वालों के नाम से कई यूपीआई अकाउंट बना रखे थे। सभी यूपीआई नंबर पर सीधे लाखों रुपए का लेनदेन करते थे।

साले के खाते में जमा कराता था रुपए: आरक्षक मन्नू प्रजापति अपने साले के बैंक खाते में रुपए जमा कराता था। उसके खाते में करोड़ों रुपए के ट्रांजेक्शन मिले हैं। बाकी आरक्षकों ने कोरबा में करोड़ों की संपत्ति बनाई थी। पूरे मामले में पुलिस ने अब तक 7 लोगों को गिरफ्तार किया है। सभी अभी जेल में बंद है।

इन रूटों पर करते थे गांजे की तस्करी: आरक्षकों की टीम नियमित रूप से दुर्ग, गोंदिया, रायपुर, चांपा, सक्ती, रायगढ़, रूट पर नियमित गश्त करती थी। उनके साथ बाहर के युवक भी रहते थे। गांजा पकड़ने के बाद उसे जब्त करने के बजाय दूसरे आरोपियों को सौंप दिया जाता था। वे छत्तीसगढ़ के कई जिलों के साथ देश के कई राज्यों के तस्करों को गांजा बेचते थे। इसके एवज में खरीदार सीधे खाते में उन्हें पैसे भेजता था।

राज्य शासन को एसईसीएल ने सौंपा 1585.827 हेक्टेयर वन भूमि

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़ विधानसभा के स्थानीय विधायक की बड़ी चिंता का उस वक्त अंत हो गया, जब झगराखाड़ से इसकी शुरुआत हुई। प्रदेश के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल अपने विधानसभा मनेंद्रगढ़ के विकास को लेकर कृत संकल्पित है, और यह उसी का परिणाम हैं, कि बड़ी जद्दोजहद के बाद एसईसीएल हसदेव क्षेत्र से लीज की जमीन वापस करने की शुरुआत हुई। दरअसल मनेंद्रगढ़ विधानसभा का अधिकांश हिस्सा एसईसीएल के लीज की जमीन है, और यहां निकाय के विकास कार्यों पर ज्यादातर अवरोध उत्पन्न होता रहा है। आजादी के बाद विधानसभा का यह पहला ऐसा समय है जब क्षेत्र को उसका अपना अलग पहचान मिलेगा और विकास कार्यों को रफ्तार मिलेगी। विदित हो कि मनेंद्रगढ़ विधानसभा का एक बड़ा भूभाग एससीएल के लीज क्षेत्र में बड़ी आबादी के रूप में स्थापित है और यहां पर लीज क्षेत्र होने के कारण स्थानीय निकाय के जनप्रतिनिधि विकास कार्यों को अमलीजामा पहना पाने में नाकाम रहते थे, लेकिन अब एसईसीएल हसदेव क्षेत्र द्वारा झगराखांड के 1585.827 हेक्टेयर भूमि वापस कर देने के बाद स्थानीय निवासियों सहित जनप्रतिनिधियों में खुशी की लहर है और विधान सभा के अन्य लीज क्षेत्रों की आस बढ़ सी गई है।

कृत संकल्पित स्वास्थ्य मंत्री श्याम ने दिलाई शहर को एक नई पहचान: विधानसभा मनेंद्रगढ़ का नगर पंचायत झगराखाड़ एक नई सुबह की ओर है। प्रदेश के सबसे सक्रिय विधायक व साय केबिनेट के मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने अपने वायदों के अनुरूप कार्य कर एक मिशाल पेश की है, कि यदि जनप्रतिनिधि शिद्दत से किसी भी काम को करे तो क्षेत्र का कोई काम असंभव नहीं है। आजादी के बाद से चली आ रही मांग स्थापित जमीन का हक स्थानीय लोगों को दिया जाय और इसी के अंतर्गत लीज की जमीन को एसईसीएल ने झगराखांड के 1585.827 हेक्टेयर भूमि को लीज मुक्त करते हुए राज्य शासन को 16 जनवरी 2025 को सौप दिया हैं। 16 जनवरी का यह दिन झगराखांड के लोगों को सुनहरे पल की याद दिलाता रहेगा। स्थानीय विधायक श्याम बिहारी जायसवाल ने बताया कि मैंने संकल्प लिया था, कि लोगों को उनका हक दिलाऊंगा और मैंने इसकी शुरुआत कर दी है। एक जनप्रतिनिधि के रूप सिर्फ मेरे लिए ही नहीं बल्कि झागराखाड़ के लिए गौरव भरा आज का दिन है। मुझे बेहद खुशी हैं कि मैंने लोगों को उनका हक दिला पाने में अपनी भूमिका निभा सका। आज के बाद से यहां विकास की बयार बहेगी, लोगों को वन अधिकार पट्टा के माध्यम से जमीन का हक मिलेगा, निकाय के कामों में तेजी आएगी, पलायन जैसी समस्या का समाधान होगा ओर लोग स्थायित्व की ओर रुख करेंगे। बेवजह एसईसीएल के द्वारा विकास कार्यों पर लगाया जाने वाला अवरोध का अब अंत हो गया है।

लीज की जमीन वापस करने का अधोहस्ताक्षरित पत्र: सईसीएल हसदेव क्षेत्र के द्वारा जारी पत्र में उल्लेखित है कि एस.ई.सी.एल. हसदेव क्षेत्र के झगराखाण्ड कोल ब्लॉक कुल रकबा 2613.094 हेक्टेयर (1893.372 हेक्टेयर वनभूमि, 278.803 हेक्टेयर राजस्व भूमि एवं 440.919 हेक्टेयर निजी भूमि) में झगराखाण्ड लीज नवीनीकरण के प्रस्ताव में 1893.372 हेक्टेयर वनभूमि में से रकबा 256.545 हेक्टेयर वनभूमि एवं हल्दीबाड़ी भूमिगत खदान हेतु व्यपवर्तित रकबा 51.00 हेक्टेयर वनभूमि कुल रकबा 307.545 हेक्टेयर वनभूमि को घटाकर शेष वनभूमि 1585.827 हेक्टेयर वनभूमि को वनभूमि के मूल स्वरूप में वापस करने बावत् दिनांक 08.05.2024 को अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (भू-प्रबंध) की अध्यक्षता में एस.ई.सी.एल. हसदेव क्षेत्र एवं वन विभाग के क्षेत्रीय अधिकारियों की आयोजित बैठक में प्राप्त निर्देशानुसार एस.ई.सी.एल. हसदेव क्षेत्र के झगराखाण्ड कॉलरी के 1585.827 हेक्टेयर वनभूमि को हस्तांतरण हेतु वन विभाग के द्वारा गठित समिति के अधिकारी / कर्मचारी तथा एस.ई.सी.एल. हसदेव क्षेत्र के अधिकारी / कर्मचारी के द्वारा एस.ई.सी.एल. हसदेव क्षेत्र के अधीनस्थ वनभूमि को पूरे क्षेत्रो का भ्रमण कर सर्वेक्षण तथा के. एम.एल. फाईल बनाया गया है।

शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाने निगम के स्वच्छता अधिकारी टीम के साथ स्वयं झाड़ू लगा, कचरा डम्पिंग के साथ कर रहे श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। चिरमिरी नगर को स्वच्छ व सुंदर वातावरण बनाए रखने की दिशा में शनिवार 18 जनवरी को राज्य सरकार के नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव, जिला कलेक्टर व प्रशासक नगर निगम चिरमिरी डी. राहुल वेंकट के मार्गदर्शन में आयुक्त नगर निगम चिरमिरी रामप्रसाद आचला के निर्देशानुसार स्वच्छता अधिकारी उमेश तिवारी ने अपनी स्वच्छता टीम के साथ शहर के बड़ाबाजार वार्ड क्रमांक - 28 इंदिरा वार्ड के तालाब परिसर की वृहद स्तर पर स्वयं झाड़ू लगाकर व कचरा डंप करते हुए श्रमदान कर स्वच्छता कर्मी व स्वच्छता दीदियों के साथ पूरे परिसर की साफ-सफाई की एवं स्वयं सफाई में सहभागी बने। निगम आयुक्त आचला व स्वच्छता अधिकारी ने आमजनों से अपील करते हुए कहा कि अपने घरों के आसपास साफ-सफाई बनाएं रखें।

आरटीओ एसआई की भतीजी को ट्रक ने कुचला

एक दिन पहले लगी थी ट्रैफिक-अवेयरनेस में नौकरी, भिलाई में 3 सड़क-हादसे में 2 लोगों की मौत

मीडिया ऑडीटर, भिलाई (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के भिलाई में 3 अलग-अलग सड़क हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई। शनिवार सुबह जिम जाते समय आरटीओ उप निरीक्षक की भतीजी को ट्रक ने कुचल दिया। एक दिन पहले ही उसकी ट्रैफिक अवेयरनेस की कंपनी में नौकरी लगी थी। घटना पुरानी भिलाई थाना क्षेत्र की है।

वहीं, कुम्हारी थाना इलाके में नेशनल हाईवे पर शुक्रवार-शनिवार देर रात एक ट्रक ने युवक को रौंद दिया। इधर, भिलाई स्टील प्लांट और एयरफोर्स से रिटायर दीपक कुमार नायक (55) भी सड़क हादसे का शिकार हो गए।

पहली घटना:- हाईवे से उतरकर ट्रक ने सर्विस लेन पर चल रही युवती को कुचला: जानकारी के मुताबिक, भिलाई-3 में शनिवार सुबह आरटीओ उप निरीक्षक की भतीजी सौम्या तिवारी (23) जिम जा रही थी। इसी दौरान ट्रक ने उसे कुचल दिया। सौम्या हर दिन अपनी मां के साथ पास स्थित जिम में एक्सरसाइज करने जाती थी। लेकिन आज (शनिवार) को वो अकेली जा रही थी।

सुबह 5.30 बजे अपने घर से जिम जाने के लिए निकली। इसी दौरान भिलाई-रायपुर हाईवे से उतरकर एक ट्रक ने सर्विस लेन पर चल रही सौम्या को टक्कर मारी और वापस हाईवे पर चला गया। हादसे के बाद चालक ट्रक लेकर रायपुर की ओर फरार हो गया। हादसे में युवती की मौके पर ही मौत हो गई। पुरानी भिलाई पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सुपेला के मॉर्चुरी में भेज दिया है।

परिजन बोले- यह हादसा नहीं हत्या है: परिजनों का कहना है कि, घटना के कई घंटे गुजर जाने के बाद भी पुलिस गाड़ी का पता नहीं लगा सकी है। उनका कहना है कि, यह हादसा नहीं हत्या है। पुलिस को सीसीटीवी फुटेज खंगालना चाहिए कि, हाईवे से उतरकर सर्विस लेन में खड़ी युवती को उसने टक्कर कैसे मार दिया।

दूसरी घटना:- ट्रक ने युवक को रौंदा: भिलाई-3 में नेशनल हाइवे पर शुक्रवार-शनिवार की देर रात ट्रक ने एक युवक को रौंद दिया। उसके ऊपर से ट्रक गुजर गई। जिससे उसकी जान चली गई। कुम्हारी पुलिस ने उसके शव को सुपेला अस्पताल स्थित मॉर्चुरी में रखा है। युवक की अभी पहचान नहीं हो पाई है।

तीसरी घटना:- रिटायर्ड बीएसपी कर्मी को मारी टक्कर: इधर, भिलाई स्टील प्लांट और एयरफोर्स से रिटायर दीपक कुमार नायक (55) शुक्रवार शाम सड़क हादसे का शिकार हो गए। वो शाम को रिसाली और मरोदा के बीच सड़क किनारे पैदल जा रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार कार ने उन्हें टक्कर मार दी।

हादसे में उनका पैर फैक्चर हो गया, शरीर के कई हिस्से में भी चोटें आई हैं। उनका सेक्टर-9 अस्पताल में इलाज चल रहा है। बताया जा रहा है कि, उनका एक बेटा और बेटी है, जो किसी काम से भुवनेश्वर गए थे। वो भी सूचना मिलने ही भिलाई पहुंच गए। फिलहाल पुलिस सभी मामले की जांच कर रही है।

दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में ऊर्जा और उत्साह का अद्भुत संगम

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़, कार्यक्रम का प्रारम्भ भव्य उद्घाटन समारोह के साथ किया गया। विद्यालय की निदेशिका पूनम सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। सबसे पहले विद्यालय छात्र परिषद के प्रमुख छात्र आदि अंशलाल एवं प्रमुख छात्रा समृद्धि अग्रवाल द्वारा मुख्य अतिथि एवं संस्था की निदेशिका श्रीमती पूनम सिंह तथा प्राचार्य डॉ बसंत कुमार तिवारी को ससम्मान मंच तक लाया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम का आरम्भ मेजर ध्यानचंद की छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुआ, विद्यालय के वरिष्ठ खेल शिक्षक श्री प्रेम कुमार वर्मा द्वारा खेल दिवस शुरू करने की अनुमति ली गई, मुख्य अतिथि द्वारा अनुमति प्रदान करने के पश्चात खेल दिवस के रंगारंग कार्यक्रम की शुरुआत हुई, यह दिन दौड़, रिले और टीम खेलों सहित विभिन्न प्रकार के खेल आयोजनों से भरा हुआ था, जिसमें कक्षा एक से लेकर कक्षा ग्यारहवीं तक के छात्र-छात्राओं ने उत्साह के साथ भाग लिया और अपने एथलीट कौशल का प्रदर्शन किया विद्यालय के मैदान में बच्चों का जोश देखने लायक था, हर सदन के छात्र अपने-अपने सदन के झंडे को ऊंचा रखने के लिए पूरी ताकत झोंक रहे थे, दर्शकों ने भी तालियां और जयकारों के साथ खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। विद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर बसंत कुमार तिवारी ने विजयी छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की और अपने संदेश में कहा कि यह दिन केवल खेल प्रतियोगिताओं का नहीं अपितु छात्रों के उत्साह ,ऊर्जा और परिश्रम का उत्सव है, खेल के मैदान पर सिखाए गए सबक जीवन के हर क्षेत्र में हमारी सफलता की नींव बनते हैं हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं इस खेल दिवस का उद्देश्य बच्चों को शारीरिक और मानसिक विकास को प्रोत्साहित करना था, खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है अपितु तो अनुशासन, टीमवर्क और नेतृत्व कौशल को भी विकसित करता है। संस्था के निदेशिका एवं कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूनम सिंह ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं, और विद्यालय को संबोधित करते हुए कहा खेलों का हमारे जीवन में एक विशेष स्थान है यह न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रखते हैं बल्कि अनुशासन और आत्मविश्वास जैसे गुणों को भी विकसित करता है यह अत्यंत गर्व का विषय है कि हमारे विद्यालय के छात्र-छात्राएं पढ़ाई के साथ खेलों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

बॉयफ्रेंड के लिए लड़कियों में गैंगवार,एक-दूसरे पर बरसाए थप्पड़

सरेराह जमीन पर पटका, फिर चलाए लात-घूंसे, चौक के पास सिगरेट पी रही थीं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में दबंग लड़कियों ने एक लड़की की पिटाई कर दी। लड़कियों ने पहले तो उस पर थप्पड़ों की बारिश कर दी फिर उसे खींचकर जमीन पर गिरा दिया। फिर लात-घूंसों से पिटाई शुरू कर दी। इस दौरान पीड़ित लड़की चीख-चीखकर रोती रही, लेकिन उसे बचाने कोई नहीं आया। लड़कियों की सरेराह गुंडागर्दी का यह वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। पूरा मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है।

मामला पुराना बस स्टैंड से टेलीफोन एक्सचेंज रोड के बीच का है। शुक्रवार शाम सड़क किनारे चार लड़कियां सिगरेट पीते हुए खड़ी थीं। इस दौरान लड़कियां आपस में बातचीत कर रही थीं। जिसके बाद अचानक एक लड़की को पकड़ कर थप्पड़ मारने लगी। लड़कियों के इस हाईवोल्टेज ड्रामा को देखकर लोगों की भीड़ जुट गई। ये लड़कियां चिंकी और रिया गैंग की बताई जा रही हैं। इनमें से दो लड़कियों के बीच बॉयफ्रेंड को लेकर विवाद था।

प्रेम प्रसंग के चलते हुआ झगड़ा: बताया जा रहा है कि लड़कियों के बीच प्रेम प्रसंग को लेकर विवाद हुआ है। दबंगई दिखाने वाली लड़कियां कपड़े की दुकान में काम करती हैं। जिस लड़की की पिटाई की गई, वो भी प्राइवेट जॉब करती है। लड़की उस लड़के से बातचीत करती थी, जिसे दूसरी लड़की पसंद करती थी। इसी विवाद के चलते उन्होंने मिलकर लड़की की जमकर पिटाई कर दी।

सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा वीडियो: लड़कियों की दबंगई को देखकर सड़क के दूसरी ओर खड़े लोगों ने इस मारपीट का वीडियो बना लिया। इसमें लड़कियां मिलकर एक लड़की को थप्पड़ मारती दिख रही है, जिसके बाद लड़कियों ने युवती को धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया और फिर लात-घूंसों से उसकी पिटाई करने लगे। यह वीडियो अब सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है।

पुलिस बोली- नहीं मिली है कोई शिकायत: इधर, सोशल मीडिया में लड़कियों के वायरल वीडियो पर सिविल लाइन टीआई एसआर साहू ने कहा कि थाने में किसी युवती ने मारपीट की शिकायत नहीं की है। सोशल मीडिया में वायरल वीडियो की जानकारी मिली है। इसके आधार पर युवतियों की पहचान कर जानकारी जुटाई जा रही है। जांच के बाद मामले में नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

नवविवाहिता ने जहर पीकर दी जान

परिजन बोले-सुसराल वाले छोटी जाति की कहकर ताना मारते थे, डेढ़ साल पहले हुई थी लव मैरिज

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में एक नवविवाहिता ने जहर पीकर अपनी जान दे दी। परिजनों ने ससुराल पक्ष पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि ससुराल वाले उसे छोटी जाति की होने का ताना मारते थे। घटना कुसमुंडा थाना क्षेत्र की है। मृतका के पिता नारायण भारद्वाज के मुताबिक, काजल (21 साल) और कमलेश महंत (24 साल) नरईबोध गांव के रहने वाले थे। डेढ़ साल पहले दोनों ने इंटरकास्ट लव मैरिज की थी। शादी के शुरुआती दिनों में सब कुछ ठीक था, लेकिन बाद में ससुराल वाले प्रताड़ित करने लगे।

कीटनाशक पीकर दी जान: इसी बीच शुक्रवार शाम को विवाद के बाद उसने कीटनाशक पी लिया। काजल की हालत बिगड़ने पर ससुराल वाले उसे आनन-फानन में जिला अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मौत के बाद पुलिस को भी मामले की जानकारी दी गई।

पुलिस ने परिजन के बयान लिए: पुलिस के मुताबिक, काजल के पिता ने ससुराल पक्ष पर अपनी बेटी के साथ हमेशा मारपीट करते रहने का आरोप लगाया है। उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की मांग की है। वहीं, निजी कंपनी में काम करने वाले कमलेश महंत ने इन आरोपों को नकारा है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नायब तहसीलदार की मौजूदगी में पंचनामा की कार्रवाई पूरी की है।

पीएम मोदी ने 65 लाख को दिया भूमि का अधिकार

बलौदाबाजार के 5841 लोगों को मिला कानूनी हक, स्वामित्व योजना से मिलेगा लाभ

मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को वर्चुअल माध्यम से स्वामित्व योजना के तहत देशभर के 65 लाख लोगों को अधिकार अभिलेख पत्र वितरित किए। बलौदाबाजार जिले में आयोजित कार्यक्रम में जिला ऑडिटोरियम में प्रभारी एवं स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल की उपस्थिति में 5,841 लोगों को अधिकार अभिलेख पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम में कई महत्वपूर्ण गतिविधियां आयोजित की गईं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत 5 लाभार्थियों को आवास की चाबियां सौंपी गईं। इसके अलावा, 5 लोगों को आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए। विश्व शौचालय दिवस के मौके पर स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सरपंचों, सचिवों और लखपति दीदियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को नशामुक्ति, स्वच्छता और यातायात सुरक्षा की शपथ भी दिलाई। स्वामित्व योजना के तहत प्रदान किए गए अधिकार अभिलेख पत्र से ग्रामीणों को अपनी भूमि का कानूनी अधिकार मिलेगा, जिससे उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में आसानी होगी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री जायसवाल ने कहा कि लोगों को जमीन के कागजात मिलने में होने वाली परेशानी को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2020 में स्वामित्व योजना शुरू की है। इस योजना से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को अपनी भूमि का कानूनी दास्तावेज मिल जाता है।

एक बार दस्तावेज बन जाने के बाद मोबाइल से बार कोड स्कैन कर कहीं भी प्रिंट करा सकते हैं। किसी दफ्तर का चक्कर भी नहीं लगाना पड़ेगा। भूमि का मालिकाना हक मिल जाने से लोग शासन की योजनाओं का लाभ आसानी से उठा सकते हैं और बैंक से ऋण लेकर स्वरोजगार भी शुरू कर सकते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है, जो "सबका साथ, सबका विश्वास" के साथ तेजी से आगे बढ़ रही है। पिछले एक साल में अधिकतर वादों को पूरा किया गया है, जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 18 लाख नए आवास की स्वीकृति, 3100 रुपये में 21 क्विंटल धान खरीदी, और कृषक कल्याण योजना के तहत अंतर की राशि का एकमुश्त वितरण। प्रदेश में खुशहाली का माहौल है और प्रदेश की तस्वीर पूरी तरह से बदल चुकी है। कार्यक्रम को पूर्व विधायक बिलाईगढ़ डॉ. सनम जांगड़े और जिला अध्यक्ष आनंद यादव ने भी संबोधित किया।

कलेक्टर दीपक सोनी ने स्वागत भाषण में बताया कि स्वामित्व योजना के तहत जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में ड्रोन से सर्वे कराया गया है, और इस सर्वे एवं सत्यापन के आधार पर राजस्व विभाग द्वारा अधिकार अभिलेख पत्र तैयार किए गए हैं। अब तक 45 गांवों के 5,841 लोगों के अधिकार अभिलेख तैयार किए गए हैं। जिला प्रशासन शासन की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ महिला आयोग की सदस्य लक्ष्मी वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष चित्तावर जायसवाल, स्काउट गाइड के राज्य उपाध्यक्ष विजय केशरवानी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत दिव्या अग्रवाल सहित अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में हितग्राही उपस्थित थे।

वार्डों के समस्या निदान हेतु कंप्यूटर ऑपरेटर और स्वच्छता सुपरवाइजरों की लगाई गई ड्यूटी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगर पालिक निगम चिरमिरी के आयुक्त रामप्रसाद आचला ने बीते दिनों स्वच्छता अधिकारी उमेश तिवारी के साथ स्वच्छता के सुपरवाइजरों की बैठक ली थी। बैठक उपरांत निर्णय नगर निगम चिरमिरी के आदेशानुसार प्रशासनिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए 1100 समस्या के निदान के माध्यम से प्राप्त ऑनलाइन शिकायतों पर संबंधित विभाग के अधिकारी कर्मचारी से समन्वय कर शिकायतों का निराकरण ऑनलाइन पोर्टल निदान 1100 के शिकायतों का विलोपन करते हुए नगर निगम द्वारा पूरे 40 वार्डों के लिए 04 कम्प्यूटर ऑपरेटर 12 स्वच्छता सुपरवाइजरों की ड्यूटी लगाई गई है। ये सभी कर्मचारी ऑनलाइन 1100 में आमजनों की समस्याओं का निराकरण कर अपने अधीनस्थ अधिकारी को अवगत कराएंगे।

7 राज्यों में घना कोहरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 7 राज्यों में आज घने कोहरे का अलर्ट जारी किया गया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश में कोहरे के कारण विजिबिलिटी घटी। यूपी के कई जिलों में विजिबिलिटी 50 मीटर तक रह गई। कोहरे के चलते कानपुर में 36 और आगरा में 10 ट्रेनें लेट आईं। यहां ठंड के कारण कानपुर, मेरठ, आगरा और वाराणसी में 8वीं तक के स्कूल बंद कर दिए गए। वहीं, राजस्थान में तापमान में गिरावट लगातार जारी है। हिल स्टेशन माउंट आबू में न्यूनतम तापमान 0.8 डिग्री तक पहुंच गया है। उधर, एमपी के 18 शहरों में कोल्ड डे की स्थिति देखी गई। मौसम विभाग ने कहा है कि देश के 4 उत्तरी राज्यों (जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड) में बर्फबारी के कारण पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में भी तापमान गिर रहा है। हिमाचल में भारी बर्फबारी के नेशनल हाईवे 3 और नेशनल हाईवे 305 और अटल टनल बंद कर दी गई है। 10 शहरों का पारा माइनस में पहुंच चुका है। कुकुमसेरी में सबसे कम माइनस 12 डिग्री दर्ज किया गया।

राजनाथ सिंह ने संगम में डुबकी लगाई

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ का आज छठा दिन है। दोपहर 12 बजे तक 20 लाख श्रद्धालुओं ने स्नान किया। अब तक 7.5 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु संगम स्नान कर चुके हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने दोपहर में संगम में डुबकी लगाई। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच उन्होंने स्नान किया। साथ में मंत्री नंदी भी रहे। उनके पहुंचने से पहले आर्मी ने पूरे किला घाट को अपने कब्जे में ले लिया था। स्निफर डॉग्स और बम स्क्वायड जांच की। राजनाथ साधु-संतों से मुलाकात और सेना के अफसरों के साथ मीटिंग भी करेंगे। देर रात शहर और महाकुंभ क्षेत्र में आर्मी और पुलिस के जवानों ने चेकिंग की। 18 संदिग्ध लोगों को पकड़ा। इनमें से कुछ के पास आधार कार्ड नहीं थे। सेक्टर-18 में बम की सूचना पर आधी रात तक पुलिस, डॉग स्क्वॉड और बम डिस्पोजल स्क्वॉड की टीमों ने सर्च ऑपरेशन चलाया, लेकिन कहीं कुछ नहीं मिला। सफाईकर्मी के पास दोपहर में कॉल आई थी कि सेक्टर-18 में थोड़ी देर में ब्लास्ट होगा। पुलिस कॉल डिटेल निकलवा रही है।

डल्लेवाल को फिर उल्टियां आईं

पटियाला (एजेंसी)। पंजाब और हरियाणा के खनौरी बॉर्डर पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल के आमरण अनशन का आज 54वां दिन है। शुक्रवार रात को डल्लेवाल को 3-4 बार उल्टियां आईं। पहले वे 2 लीटर तक पानी पी रहे थे, लेकिन अब एक लीटर से भी कम पानी पी रहे हैं। खनौरी बॉर्डर पर 111 किसानों के साथ शुक्रवार को हरियाणा के 10 किसान भी अनशन पर बैठ गए। वहीं खनौरी और शंभू मोर्चे के नेताओं और संयुक्त किसान मोर्चा (स्यरू) के नेताओं की पटियाला के पातड़ा में मीटिंग शुरू हो गई है। मीटिंग में 26 जनवरी को होने वाले ट्रैक्टर मार्च को लेकर स्ट्रेटजी बनाई जाएगी। उधर, एसकेएम ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक लेटर लिखा है। जिसमें उन्होंने किसान नेता डल्लेवाल की सेहत पर चिंता व्यक्त करते हुए किसानों की मांगों को मानने का अनुरोध किया है।

पीएम मोदी ने 65 लाख स्वामित्व संपत्ति कार्ड बांटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी वर्चुअली इस इवेंट में शामिल हुए, जबकि फील्ड पर 13 केंद्रीय मंत्री मोर्चा संभाला। कई राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, संबंधित राज्यों के मंत्री और पंचायत प्रतिनिधि भी वर्चुअली शामिल हुए।

पीएम मोदी शनिवार को 10 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों में 65 लाख स्वामित्व संपत्ति कार्ड बांटे। कार्यक्रम में वर्चुअली जुड़े पीएम मोदी ने कहा- आज का दिन गांवों के लिए अर्थव्यवस्था के लिए अहम है। 5 साल पहले यह योजना शुरू की गई थी, ताकि गांव में रहने वालों को उनके घर का कानूनी प्रमाण दिया जा सके।

पीएम मोदी ने कहा- योजना के तहत गांव के करीब सवा 2 करोड़ लोगों को अपने घर का पक्का कानूनी दस्तावेज मिला है। पहले गांव में लोगों के पास लाखों-लाख करोड़ की संपत्ति होने के बावजूद उसकी इतनी कीमत नहीं थी। क्योंकि उनके पास कानूनी दस्तावेज होते ही नहीं थे। अब 100 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की इकोनॉमिक एक्टिविटीज का रास्ता खुल गया है।

घर की मिलकियत को लेकर विवाद होते रहते थे। दबंग इन पर कब्जा कर लेते थे। कानूनी दस्तावेज के बिना बैंक भी किनारा कर लेते थे। दशकों तक ऐसा ही चलता रहा। 2014 में जब हमारी सरकार बनी तो हमने इस मुद्दे से निपटने की ठानी, कोई सरकार अपने गांव के लोगों को इस तरह परेशानी में नहीं छोड़ सकती थी।

दरअसल, पीएम मोदी वर्चुअली इस इवेंट में शामिल हुए, जबकि फील्ड पर 13 केंद्रीय मंत्री मोर्चा संभाला। कई राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, संबंधित राज्यों के मंत्री और पंचायत प्रतिनिधि भी वर्चुअली शामिल हुए। इस योजना में ड्रोन तकनीक के जरिए जमीनों की मैपिंग और मालिकों का एक रिकॉर्ड तैयार किया जाता है। इसके बाद संपत्ति के मालिकों को एक कार्ड मुहैया कराया जाता है। जिन 12 राज्यों में यह कार्ड बांटे गए, उनमें से 230 जिलों के 50 हजार से ज्यादा गांव शामिल हैं।

करीना ने पुलिस से कहा- सैफ महिलाओं-बच्चों को बचाने आए

मुंबई (एजेंसी)। घटना वाली रात करीना कपूर खान को घर के बाहर स्टाफ से बात करते देखा गया था। सभी परेशान नजर आ रहे थे। बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान पर हमले के मामले में पुलिस ने शुक्रवार को करीना कपूर का बयान दर्ज कर लिया था। हालांकि, यह बयान शनिवार सुबह सामने आया। करीना ने बताया कि सैफ ने महिलाओं और बच्चों को बचाने की कोशिश की। वे बीच में आए तो हमलावर जहांगीर (करीना-सैफ का छोटा बेटा) तक नहीं पहुंच पाया। उसने घर से कोई चीज भी नहीं चुराई। हमलावर बेहद आक्रामक था। उसने कई बार सैफ पर हमला किया। मैं हमले के बाद घबरा गई थी इसलिए करिश्मा मुझे अपने घर ले गई थीं। एक्ट्रेस के बयान के बाद पुलिस ने बांद्रा स्थित सतगुरु शरण बिल्डिंग, जहां सैफ रहते हैं और करिश्मा के खार स्थित आवास पर सुरक्षा बढ़ा दी है। हमले के अगले दिन सुबह संदिग्ध बदले हुए हुलिया में दिखा था।

केजरीवाल बोले- किरायेदारों को फ्री बिजली-पानी देंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार सुबह ऐलान करते हुए कहा कि चुनाव जीतने के बाद हम किरायेदारों को भी फ्री बिजली और पानी देंगे। दिल्ली में दिल्लीवासियों को फ्री-बिजली पानी की योजनाएं पहले से लागू हैं। अब आप किरायेदारों को भी इस स्कीम में जोड़ेगी। उधर,आप शनिवार सुबह 11.30 बजे आप नेताओं की एक डॉक्यूमेंट्री रिलीज करने वाली थी, लेकिन दिल्ली पुलिस ने इस डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग पर रोक लगा दी। इस डॉक्यूमेंट्री का नाम

अनब्रेकेबल रखा गया है। इसमें ॅक्क नेताओं के जेल जाने की कहानी बताई गई है। स्क्रीनिंग रोकने को लेकर केजरीवाल ने एक्स पर कहा- भाजपा इस फिल्म से बुरी तरह से डरी हुई है। आखिर क्यों? भाजपा इसे क्यो रोकना चाहती है? यह फिल्म पर्दे के पीछे के उन रहस्यों को उजागर करती है, जिनमें गलत तरीके से ॅक्क नेताओं को गिरफ्तार करने की साजिश रची गई। ये भाजपा सरकार के गैर कानूनी और गैर संवैधानिक कामों को उजागर करती है।

दिल्ली में लगातार 15 साल तक सत्ता में रही कांग्रेस को पिछले दो विधानसभा चुनावों में झटका लगा है और वह एक भी सीट जीतने में नाकाम रही है।

भारत-चीन बॉर्डर पर सेना-सरकार का एक जैसा रुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-चीन बॉर्डर पर मौजूदा स्थिति को लेकर विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि इस मुद्दे पर आर्मी चीफ और सरकार का रुख एक जैसा ही है। दरअसल आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने 13 जनवरी को कहा था कि लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (चीन सीमा) पर स्थिति संवेदनशील है, लेकिन कंट्रोल में है।

इस टिप्पणी को लेकर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि सेना प्रमुख ने जो कहा है और हमने जो रुख अपनाया है, उसके बीच हमें कोई विरोधाभास नहीं दिखता। विदेश मंत्रालय बोला- एलएसी पर तनाव कम करने का काम जारी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल शुक्रवार को प्रेस ब्रीफिंग कर रहे थे।

जनरल द्विवेदी के हालिया बयानों के बारे में पूछे जाने पर, जायसवाल ने कहा कि भारत-चीन सीमा मुद्दे पर सेना और विदेश मंत्रालय एक ही पृष्ठभूमि पर हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विदेश मंत्री जयशंकर भी संसद में कह चुके हैं कि, ॠ्र पर तनाव कम करने का काम अभी भी जारी है।

आप का आरोप- केजरीवाल की गाड़ी पर पत्थर से हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गाड़ी पर हमला होने का दावा किया है। पार्टी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर इसका वीडियो पोस्ट किया है। इसमें कुछ लोग काले झंडे दिखाते हुए केजरीवाल की गाड़ी के बेहद करीब पहुंच गए और पत्थरबाजी करने लग गए। दरअसल, केजरीवाल नई दिल्ली क्षेत्र में चुनाव प्रचार कर रहे थे।

भाजपा प्रत्याशी प्रवेश वर्मा के गुंडों ने चुनाव प्रचार करते समय केजरीवाल पर ईंट-पत्थर से हमला किया। उन्हें चोट पहुंचाने की कोशिश

की ताकि वो प्रचार ना कर सकें। केजरीवाल इस कायराना हमले से डरने वाले नहीं हैं। दिल्ली की जनता इसका करारा जवाब देगी। इससे पहले 30 नवंबर 2024 को दिल्ली के ग्रेटर कैलाश इलाके में केजरीवाल पर एक शख्स ने पानी फेंका था। समर्थकों ने मौके पर ही आरोपी की पिटाई कर दी थी। भाजपा का आरोप- केजरीवाल ने कार्यकर्ताओं पर गाड़ी चढ़ाई भाजपा उम्मीदवार प्रवेश वर्मा ने केजरीवाल पर पार्टी कार्यकर्ताओं पर गाड़ी चढ़ाने का आरोप लगाया है। प्रवेश ने कहा कि जब भाजपा कार्यकर्त्ता सवाल पूछ रहे थे, तब केजरीवाल ने अपनी गाड़ी से तीन युवकों को टक्कर मार दी। दोनों को लेडी हार्डिंग अस्पताल ले जाया गया। हार सामने देखकर वह लोगों की जान की कीमत भूल गए।

पूजा स्थल कानून- केंद्र का सुप्रीम कोर्ट में जवाब दाखिल नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कानून के मुताबिक, 15 अगस्त 1947 से पहले अस्तित्व में आए किसी भी धर्म के पूजा स्थल को किसी दूसरे धर्म के पूजा स्थल में नहीं बदला जा सकता। केंद्र सरकार ने 1991 के पूजा स्थल कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में अब तक जवाब दाखिल नहीं किया है।

सूत्रों के अनुसार, केंद्र ने अभी तक अपना रुख तय नहीं किया है कि वह सुप्रीम कोर्ट के सामने क्या प्रस्तुत करेगा। इस पर विचार-विमर्श चल रहा है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस में संजय रॉय दोषी करार

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर हॉस्पिटल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप और मर्डर केस में सियालदह कोर्ट ने 18 जनवरी को मुख्य आरोपी संजय रॉय को दोषी करार दिया। सजा का ऐलान सोमवार (20 जनवरी) को किया जाएगा। अदालत ने 162 दिन बाद फैसला सुनाया है। सीबीआई ने आरोपी संजय के लिए फांसी की मांग की है। वहीं, संजय की बड़ी बहन ने कहा कि ट्रॉयल कोर्ट के इस फैसले को किसी भी अदालत में चुनौती देने की कोई योजना नहीं है।

मुझे इस मामले में फंसाया गया है। मैंने यह काम नहीं किया। जिन्होंने ये काम किया है, उन्हें जाने दिया गया है। एक आईपीएस इसमें शामिल है। मैं रुद्राक्ष की माला पहनता हूं और अगर मैंने अपराध किया होता तो यह टूट जाती पहले जानिए इस केस के बारे में आरजी कर हॉस्पिटल में 8-9 अगस्त की रात ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर हुआ था। 9 अगस्त की सुबह डॉक्टर की लाश सेमिनार हॉल में मिली थी। फुटेज के आधार पर पुलिस ने संजय रॉय नाम के सिविक वॉलंटियर को 10 अगस्त को अरेस्ट किया था। इस घटना के बाद कोलकाता समेत देशभर में प्रदर्शन हुए। बंगाल में 2 महीने से भी ज्यादा समय तक स्वास्थ्य सेवाएं ठप रही थीं।

चंबा में लगे भूकंप के झटके,रिक्टर स्केल पर 3.2 की तीव्रता, 5 किमी की गहराई में केंद्र

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश चंबा में शनिवार दोपहर करीब 3 बजकर 51 मिनट पर भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 3.2 मापी गई। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी (ह्रष्टस्) के अनुसार, जमीन के भीतर इसकी गहराई 5 किलोमीटर रही। अब तक इससे किसी भी प्रकार के जान व माल के नुकसान की सूचना नहीं है। जिन लोगों ने झटके महसूस किए, वह घरों से बाहर निकल आए। हालांकि झटकों की तीव्रता कम होने की वजह से ज्यादातर लोग इन्हें महसूस नहीं कर पाए। चंबा जिला के अधिकांश क्षेत्र भूकंप की दृष्टि से अति संवेदनशील यानी जोन 5 में आते है। इसलिए यहां बार-बार भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। धरती की सतह मुख्य तौर पर 7 बड़ी और कई छोटी-छोटी टेक्टोनिक प्लेट्स से मिलकर बनी है। ये प्लेट्स लगातार तैरती रहती हैं और कई बार आपस में टकरा जाती हैं। टकराने से कई बार प्लेट्स के कोने मुड़ जाते हैं और ज्यादा दबाव पड़ने पर ये प्लेट्स टूटने लगती हैं।

सैफ अली खान हमला, छत्तीसगढ़ से संदिग्ध हिरासत में

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान पर हमले के मामले में पुलिस ने शनिवार को एक संदिग्ध को छत्तीसगढ़ के दुर्ग से हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। आरपीएफ प्रभारी संजीव सिन्हा के मुताबिक, संदिग्ध को शालीमार ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस से पकड़ा है। यह शख्स जनरल डिब्बे में बैठा था। इसकी पहचान मुंबई से भेजे गए, फोटो के आधार पर की गई। रात 8 बजे मुंबई

से टीम दुर्ग पहुंचेगी। पुलिस अब तक करीब 50 लोगों से पूछताछ कर चुकी है। मामले में 35 टीमें लगाई गई हैं, जो आरोपी का सुराग ढूंढने में लगी हुई हैं। वहीं, शुक्रवार को करीना कपूर का बयान दर्ज किया। लेकिन यह बयान शनिवार सुबह सामने आया। करीना ने बताया कि सैफ ने महिलाओं और बच्चों को बचाने की कोशिश की। वे बीच में आए तो हमलावर जहांगीर (करीना-सैफ का छोटा बेटा) तक नहीं पहुंच पाया। उसने घर से कोई भी चीज नहीं चुराई। हमलावर बेहद आक्रामक था। उसने कई बार सैफ पर हमला किया। मैं हमले के बाद घबरा गई थी इसलिए करिश्मा मुझे अपने घर ले गई थीं।

घर की छत पर गिरा सैटेलाइट पेलोड बैलून

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के बीदर जिले के जलसांगी गांव में शनिवार सुबह सैटेलाइट पेलोड बैलून एक घर की छत पर गिरा। गांववालों ने बताया कि एयरबैग जैसे दिखने वाले इस बैलून में एक बड़ी मशीन लगी हुई थी। जिसमें लाल लाइट जल रही थी। ग्रामीणों ने कहा- राउंड स्पेसशिप की तरह दिखने वाले इस ऑब्जेक्ट के साथ एक लेटर भी मिला। इसमें कन्नड़ भाषा में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च बैलून सर्विस लिखा हुआ था। ग्रामीणों ने इसकी सूचना होम्नाबाद पुलिस को दी।

मौके पर पहुंची पुलिस ने पेलोड के इस गांव में लैंड होने की जानकारी टीआईएफआर को दी। ञ्जढ्ढस्नक्रकी टीम पेलोड को कलेक्ट करने के लिए गांव पहुंच रही है। पुलिस ने बताया कि सैटेलाइट पेलोड बैलून टीआईएफआर ने एक्सपेरिमेंट के लिए उड़ाया था। यह कोई नई बात नहीं है, टीआईएफआर अक्सर ऐसे एक्सपेरीमेंट करता रहता है।

आरजेडी में अब लालू जैसी पावर तेजस्वी को, पार्टी में सिंबल से लेकर उम्मीदवार तक तय करेंगे, लालू बोले- चुनावी बिगुल बज चुका है

पटना (एजेंसी)। आरजेडी में अब राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव जैसी पावर तेजस्वी यादव को मिल गई है। वे सिंबल से लेकर चुनावी उम्मीदवार तक का नाम तय करेंगे। मतलब अब आरजेडी में सबकुछ तेजस्वी ही तय करेंगे। शनिवार को पटना के होटल मोर्या में हुई पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में ये फैसला लिया गया।

बैठक में लालू यादव ने कहा कि चुनाव का बिगुल बज चुका है, तैयारी शुरू कर दें। बैठक के बाद आरजेडी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद मनोज झा ने बताया कि सांगठनिक चुनाव की डेट तय हो चुकी है। पंचायत, ब्लॉक, बूथ, जिला, राज्य

सभी पदों के लिए चुनाव होंगे।

रामचंद्र पूर्वे को मुख्य निर्वाची पदाधिकारी बनाया गया है। प्रदेश प्रवक्ता चितरंजन गगन सहायक निर्वाची अधिकारी होंगे।

2 घंटे चली राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव, तेजस्वी यादव, तेजप्रताप, मीसा भारती, राबड़ी देवी और रोहिणी आचार्य सहित तमाम कार्यकर्ता शामिल हुए। हालांकि, प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह और उनके बेटे सुधाकर सिंह बैठक में शामिल नहीं हुए हैं।

प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के मीटिंग में नहीं आने के सवाल पर मनोज झा ने कहा कि पार्टी में सब नॉर्मल है। कोई दिक्कत नहीं है।

जगदानंद के नाराज होने की खबर काफी दिनों से चर्चा में है। उपचुनाव में पार्टी को मिली हार के बाद से ही वो पार्टी दफ्तर नहीं आ रहे। बताया जाता है कि उन्होंने आलाकमान को खराब स्वास्थ्य का हवाला देते हुए प्रदेश अध्यक्ष के पद से मुक्त करने की बात भी की है। वहीं सांसद सुधाकर सिंह पटना में नहीं हैं, वो मुंबई गए हैं।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक की शुरुआत करते लालू यादव और तेजस्वी यादव। राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक की शुरुआत करते लालू यादव और तेजस्वी यादव।

राहुल गांधी बोले- बिहार की जाति जनगणना फर्जी

पटना (एजेंसी)। पटना में शनिवार को कांग्रेस के संविधान सुरक्षा सम्मेलन में राहुल गांधी मोदी सरकार, आरएसएस और बिहार में हुई जाति जनगणना पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि, बिहार पेपर लीक का सेंटर बन चुका है। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। मंहगाई बढ़ रही है। बोले, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी नहीं मिली थी। अगर वह कह रहे हैं कि भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी नहीं मिली, तो वह भारत के संविधान को नकार रहे हैं। वह भारत के हर संस्थान से डॉ बीआर अंबेडकर, भगवान बुद्ध, महात्मा गांधी की विचारधारा को मिटा रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा, देश की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए जाति जनगणना होनी चाहिए। यह बिहार में की गई

फर्जी जाति जनगणना की तरह नहीं होगी। जाति जनगणना के आधार पर नीति बनाई जानी चाहिए। कांग्रेस जाति जनगणना को लोकसभा और राज्यसभा में पारित करेगी। हम 50त्न आरक्षण की बाधा को ध्वस्त कर देंगे।

राहुल गांधी ने कहा संविधान में कहां लिखा है कि भारत की सारी संपत्ति सिर्फ दो से तीन लोगों के हाथ में चली जानी चाहिए। आज के भारत में विधायकों और सांसदों के पास कोई ताकत नहीं है। जब मैं पिछड़े समुदाय, दलितों, आदिवासियों से ताल्लुक रखने वाले भाजपा सांसदों से मिलता हूं, तो वे कहते हैं कि हमें पिंजरे में डाल दिया गया है।%

राहुल गांधी ने कहा, %जब मोदी को पता चला कि पिछड़े समुदाय, दलितों के लोग प्रतिनिधित्व ले रहे हैं, तो उन्होंने आपको प्रतिनिधित्व दिया, लेकिन सत्ता छीन ली। सत्ता अंबानी, अडानी और आरएसएस को दे दी गई है। उन्होंने हर संगठन में अपने लोगों को रखा है।%

मनु भाकर को पेरिस ओलंपिक के 'खराब' होते पदकों के बदले जाने की उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की स्टार पिस्टल निशानेबाज मनु भाकर को पेरिस ओलंपिक में जीते दो कांस्य पदकों के स्थान पर नये पदक मिलने की संभावना है क्योंकि वह उन खिलाड़ियों के बड़े समूह में से हैं जिन्होंने शिकायत की है कि उनके पदक खराब हो चुके हैं।

दुनिया भर के कई खिलाड़ियों ने हाल के दिनों में अपने घिसे हुए पदकों की तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर पोस्ट की हैं। यह पता चला है कि भाकर के पदकों का रंग 'उतर' गया है और वे खराब स्थिति में हैं।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने कहा कि क्षतिग्रस्त पदकों को 'मोनैई डे पेरिस (फ्रांस का राष्ट्रीय टकसाल)' द्वारा व्यवस्थित रूप से बदला जाएगा। खिलाड़ियों को मिलने वाला नया पदक पुराने के समान ही होगा। प्रत्येक ओलंपिक पदक के केंद्र में लगे लोहे के टुकड़ों का वजन 18 ग्राम (लगभग दो-तिहाई औंस) होता है। 'मोनैई डे पेरिस' फ्रांस के लिए सिक्के और अन्य मुद्रा तैयार करती है। पेरिस ओलंपिक की आयोजन समिति सभी क्षतिग्रस्त पदक बदलने के लिए 'मोनैई डे पेरिस' के साथ मिलकर काम कर रही है। पेरिस ओलंपिक और पैरालंपिक 2024 में दिये गये पदकों में प्रतिष्ठित एफिल टॉवर के टुकड़े शामिल थे।

भारत के लिये खेलने का सपना अभी भी पल रहा है-करूण नायर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लंबे इंतजार और करीब तीन साल पहले मायूसी से भरी सोशल मीडिया पोस्ट लिखने के बाद करूण नायर ने क्रिकेट के मैदान पर शानदार वापसी करते हुए विजय हजारे ट्रॉफी में पांच शतक लगाये और कहा कि आठ साल बाद भारत की जर्सी पहनने का सपना अभी भी उनके भीतर पल रहा है। नायर ने विदर्भ के लिये विजय हजारे ट्रॉफी में 752 रन बनाये।

ये वही करूण नायर हैं जिन्होंने तीन साल पहले लिखा था ,'' डियर क्रिकेट, प्लीज मुझे एक मौका और दे दो।'' क्या इंग्लैंड के खिलाफ वनडे श्रृंखला और आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के लिये उन्हें मौका मिलेगा जब चयनकर्ता भारत की वनडे टीम चुनने बैठेंगे ? यह तो समय ही बतायेगा लेकिन उन्हें सपना देखने का पूरा हक है।

नायर ने पीटीआई से कहा ,'' भारत के लिये खेलने का सपना हमेशा रहा है। वह सपना अभी भी पल रहा है। हम इसी के लिये खेलते हैं। एकमात्र लक्ष्य देश के लिये खेलना है।'' अपने कैरियर में कई उतार चढाव झेल चुके नायर बहुत

आगे की नहीं सोचना चाहते। उन्होंने कहा ,'' मुझे लगता है कि यह मेरी तीसरी वापसी है। मुझे इस लय को जारी रखना है।हर मैच में रन बनाने हैं। मैं इतना ही कर सकता हूं। सब कुछ मेरे हाथ में नहीं है।''

उन्होंने कहा ,'' जब तक चयन नहीं होता, यह सपना ही है। लेकिन मैं एक समय पर एक ही पारी पर फोकस करना चाहूंगा।'' यह पूछने पर कि उन्होंने ऐसा क्या किया कि वापस रन बन रहे हैं, 33 वर्ष के नायर ने कहा ,'' मैंने कुछ अलग नहीं किया। कोई राज नहीं है। यह बरसों की मेहनत और सब्र का फल है। हर दिन मैं एक नयी चुनौती की तरह लेता हूं और कोशिश करता हूं कि अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकूं।''

एक ऐसा भी समय था जब वह अपने भविष्य को लेकर आशंकित थे क्योंकि घरेलू मैचों और आईपीएल में रन नहीं बन रहे थे। इस बारे में नायर ने कहा ,''अगर मैं कहूं कि डरा नहीं था तो वह झूठ होगा। हर किसी को ऐसा ही महसूस होता होगा लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा कि मेरा कैरियर खत्म हो जायेगा। मैं इतना ही सोचता था कि यह किस दिशा में जा रहा है, मैं क्या कर रहा हूं, ऐसा क्यो हो रहा है।''

उन्होंने कहा ,''उस दौर से बाहर आने में समय लगा और फिर मैने खुद से कहा कि नये सिरे से आगाज करना होगा। मैने खुद को कुछ समय दिया और अपने बारे में और अपने खेल के बारे में काफी कुछ सीखा। मैं उन सीखों के लिये शुक्रगुजार हूं , उनके बिना यहां इस स्थिति में नहीं होता।' नायर ने यह भी कहा कि कर्नाटक छोड़कर विदर्भ के लिये खेलने का फैसला भी सही रहा। उन्होंने कहा ,'' मैं शुक्रगुजार हूं कि मुझे विदर्भ के लिये खेलने का मौका मिला। उन्होंने मुझे जो मंच और माहौल दिया, उसके बिना मैं यहां तक नहीं पहुंचता।

हो गई रिंकू सिंह की सगाई, राजनीति जगत की इस दिग्गज से लेंगे फेरे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज रिंकू सिंह जल्द ही शादी करने वाले है। रिंकू सिंह की सगाई हो गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के जरिए ये जानकारी सामने आई है। रिंकू सिंह ने जिस से सगाई की है वो समाजवादी पार्टी की सांसद प्रिया सरोज है। सगाई के बाद दोनों जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाले है। बता दें कि रिंकू सिंह की होने वाली पत्नी और मंगेतर प्रिया सरोज उत्तर प्रदेश के मछली शहर लोकसभा क्षेत्र से सासंद हैं। रिंकू सिंह जल्द ही सरोज के साथ सात फेरे लेने वाली है। हालांकि दोनों की शादी कब होगी इस संबंध में अभी जानकारी सामने नहीं आई है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो रिंकू सिंह की होने वाली दुल्हन प्रिया सरोज 25 वर्ष की है। वर्तमान में वो सुप्रीम कोर्ट में वकील भी है। दिल्ली यूनिवर्सिटी से पढ़ाई करने वाली प्रिया सरोज के परिवार का ताल्लुक भी राजनीति से है। प्रिया सरोज के पिता तूफानी सरोज भी मछली शहर से तीन बार लोकसभा सांसद रह चुके है। तूफानी सरोज वर्ष 1999, 2004 और 2009 में लोकसभा सांसद रहे थे। बता दें कि रिंकू सिंह 22 जनवरी से इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली व्हाइट बॉल सीरीज का हिस्सा है। इस सीरीज में वो पांच टी20 और तीन वनडे मैच खेलने वाले है। इससे पहले टी20 सीरीज खेली जाएगी। इस टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान हो चुका है।

बांग्लादेश प्रीमियर लीग में मैच फिक्सिंग को लेकर बड़ा खुलासा, सट्टेबाजों को फायदा पहुंचाने के लिए मैच के नतीजों में फेरबदल

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश प्रीमियर लीग का जारी सीजन गलत कारणों से चर्चा में है। मौजूदा सीजन में खिलाड़ियों के बीच काफी नोकझोंक देखने को मिली है और अब मैच फिक्सिंग को लेकर एक रिपोर्ट सामने आई है। जिसमें दावा किया गया है कि बांग्लादेश प्रीमियर लीग के कई मैचों के दौरान सट्टेबाजों को फायदा पहुंचाने केलिए फिक्सिंग की गई है। बांग्लादेश प्रीमियर लीग में पिछले हफ्ते मंगलवार को रंगपुर राइडर्स और ढाका कैपिटल्स के बीच टूर्नामेंट का

11वां मुकाबला खेला गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक रंगपुर राइडर्स की पारी के दौरान जानबूझकर सात रन वाइड के जरिए दिए गए, जिससे ट्रेडर्स को फायदा पहुंचाया जा सके। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्रमुख ट्रेडिंग साइटों इस ओवर पर काफी पैसे लगे थे। ट्रेडिंग साइटों पर सभी ने दांव लगाया था कि दस ओवर के बाद स्कोर 79.5 से ज्यादा होगा लेकिन ओवर के दौरान आखिरी गेंद से पहले ऐसा नहीं हो सका था। हेल्स जब क्रीज पर थे तो टीम को 12 गेंद में 26 रन चाहिए थे और तब भी अनुमानित स्कोर 78.5 तक पहुंच गया। हालांकि, जब वह आउट हुए तो टीम को आठ गेंद 18 रन चाहिए थे। नए बल्लेबाज के आनेके बाद फिर उन्हें पैसे लगाए।

रोहित शर्मा और गौतम गंभीर के बीच सबकुछ नहीं है ठीक?

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले कई दिनों से भारतीय क्रिकेट टीम के अंदर कलह की खबरें जोर पकड़ रही हैं। कभी खिलाड़ियों के बीच आपसी मतभेद तो कभी हेड कोच गौतम गंभीर और खिलाड़ियों के बीच तालमेल ना बैठने की खबरें, अपने चरम पर हैं। वहीं राहुल द्रविड़ के बाद गौतम गंभीर को जब टीम इंडिया का हेड कोच बनाया गया तब मानो लगा भारतीय टीम नई ऊंचाइयां छुएगी लेकिन हुआ इसके बिल्कुल उलट। श्रीलंका, न्यूजीलैंड और बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के हाथ भारत को करारी हार झेलनी पड़ी। या यूं कहे कि गौतम गंभीर के हेड कोच बनते ही टीम इंडिया डाउनफॉल शुरू हो गया। गंभीर की कोचिंग में टीम इंडिया का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। इसके अलावा कोच और कप्तान रोहित शर्मा के बीच सब कुछ ठीक नहीं होने की भी खबरें हैं। दरअसल, कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान हेड कोच गौतम गंभीर और भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के बीच सब कुछ ठीक नहीं था। रिपोर्ट्स में इस बात का भी दावा किया गया है कि टीम इंडिया के सीनियर खिलाड़ी कोच गौतम गंभीर के सख्त रवैये से नाखुश हैं। ऐसे में कौच गौतम गंभीर के इस्तीफा को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। तो क्या वाकई में गौतम गंभीर कोचिंग पद से इस्तीफा दे देंगे? ये सवाल तेजी से फैंस के मन में बैठ गया है। हालांकि, गंभीर के इस्तीफे को लेकर कुछ साफ नहीं हो सका है। लेकिन 8 साल पहले भी ऐसी स्थिति देखने को मिली थी जहां भारतीय कोच और कप्तान के बीच सब कुछ ठीक नहीं था। इस मनमुटाव के बाद भारतीय कोच को इस्तीफा देना पड़ा था। उस दौरान कोच अनिल कुंबले थे और कप्तान विराट कोहली। बता दें कि, 2017 में खेली गई चैंपियंस ट्रॉफी के बाद भारती कप्तान विराट कोहली और हेड कोच अनिल कुंबले के बीच सब कुछ ठीक नहीं रहा था। इसके बाद अनिल कुंबले ने कोचिंग पद से इस्तीफा दे दिया था।

स्टार टेनिस प्लेयर रोहन बोपन्ना और निकोलस बेरियेंतोस पहले दौर में हुए बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार टेनिस प्लेयर रोहन बोपन्ना के लिए ऑस्ट्रेलिया ओपन की शुरुआत वैसी नहीं रही जैसी वह चाहते थे। जिस जगह पिछले साल उन्होने जीतकर इतिहास रचा उसी जगह उन्हें पहले ही मैच में हार झेलनी पड़ी।

रोहन बोपन्ना और उनके पार्टनर कंबोडिया के निकोलस बेरियेंतोस ऑस्ट्रेलियन ओपन पुरुष युगल डबल्स के पहले दौर में हारकर बाहर हो गई।

बोपन्ना और बेरियेंतोस की 14वीं वरीयता प्राप्त जोड़ी को स्पेन के पेड्रो मार्तिनेज और जाउमी मुनार ने 7-5, 7-6 से हराया। बोपन्ना और उनके जोड़ीदार ने मजबूत शुरुआत की और शुरुआती गेम में अपनी सर्विस बरकरार रखी। स्पेन की जोड़ी ने हालांकि, धीरे-धीरे लय पकड़ी और बेसलाइन पर प्रदर्शन में निरंतरता दिखाई।

बोपन्ना और उनके जोड़ीदार ने मजबूत शुरुआत की और शुरुआती गेम में अपनी सर्विस बरकरार रखी। स्पेन की जोड़ी ने हालांकि, धीरे-धीरे लय पकड़ी और बेसलाइन पर प्रदर्शन में निरंतरता दिखाई।

बोपन्ना और एबडेन ने हालांकि, पिछला साल नवंबर में तूरिन एटीपी फाइनल्स के बाद अलग होने का फैसला किया। पिछले साल जब दोनों ने खिताब जीता था तब बोपन्ना ये खिताब जीतने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बने थे।

विनेश फोगाट करेंगी रेसलिंग के मैट पर वापसी! वीडियो शेयर कर दिया बड़ा संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलवान और कांग्रेस सांसद विनेश फोगाट जल्द ही रेसलिंग में वापसी कर सकती है। विनेश ने बीते साल पेरिस ओलंपिक में डिस्क्वालिफाई होने के बाद रेसलिंग से संन्यास ले लिया था और राजनीतिक सफर शुरू किया। हालांकि, उन्होंने इंस्टग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है जिसके बाद उनकी वापसी की चर्चा शुरू हो गई है।

विनेश फोगाट ने वीडियो शेयर किया है जिसमें वह रेसलिंग का अभ्यास करते हुए दिख रही हैं। वह अपनी विरोधी के साथ कुश्ती करती हैं और फिर उन्हें चित कर देती है। इसके बाद विनेश हंसते हुए मैच से बाहर चली जाती है। इस वीडियो के कैप्शन में उन्होंने दो इमोजी पोस्ट किए। एक इमोजी रॉकेट है वहीं दूसरी इमोजी धुएं का इमोजी है। दूसरे इमोजी का इस्तेमाल स्पीड, रफ्तार और जल्दी से आगे बढ़ने के लिए किया जाता है।

हालांकि, विनेश ने इससे पहले चार नवंबर को अपने पेरिस ओलंपिक की तस्वीरशेयर कीथी। इस तस्वीर के कैप्शन में उन्होंने लिखा कि, मान लिया तू है आज थक गया, मान लिया तू है आज घायल परिंदा, पर हौसला तुझमें अब भी बाकी है, लक्ष्य के लिए अब भी तू है जिंदा। वहीं विनेश जब विधायकी की शपथ लेने विधानसभा गई थीं तब भी उन्होंने पेरिस ओलंपिक की ही जर्सी पहनी थी।

नोवाक जोकोविच ने सर्वाधिक ग्रैंडस्लैम मैच खेलने का नया रिकॉर्ड बनाया, ओसाका तीसरे दौर में

नई दिल्ली (एजेंसी)। नोवाक जोकोविच ने बुधवार को यहां ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर के मैच में कोर्ट पर उतरते ही ग्रैंडस्लैम प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक मैच खेलने का रिकॉर्ड बनाया जबकि नाओमी ओसाका पिछले तीन साल में पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के तीसरे दौर में पहुंची।

जोकोविच चारों ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट में 430 मैच खेल चुके हैं जो नया रिकॉर्ड है। उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई ओपन के पहले दौर में रोजर फेडरर (429) की बराबरी की थी। जोकोविच ने दूसरे दौर में पुर्तगाल के क्वालीफायर जेमी फरिया को 6-1, 6-7 (4), 6-3, 6-2 से हराया। जोकोविच अब ग्रैंडस्लैम प्रतियोगिताओं में 379 मैच जीत चुके हैं जबकि 51 मैच में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। जोकोविच ने मैच के बाद कहा, ''ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट हमारे खेल के मजबूत स्तंभ हैं। इस खेल के इतिहास में वह बहुत मायने रखते हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि आज एक और रिकॉर्ड बनाने में सफल रहा।'' पुरुष वर्ग में ही तीसरी वरीयता प्राप्त कार्लोस अल्काराज़ ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए योशिहितो निशिओका पर 6-0, 6-1, 6-4 से जीत हासिल की। महिला एकल में दो बार की ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन ओसाका 2022 के बाद पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के तीसरे दौर में पहुंचीं। उन्होंने अमेरिकी ओपन की सेमीफाइनलिस्ट करोलिना मुचोवा के खिलाफ पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके 1-6, 6-1, 6-3 से जीत हासिल की। ओसाका ने इस तरह से पिछले साल अमेरिकी ओपन में मुचोवा से मिली हार का बदला भी चुकता कर दिया।

इस बीच विश्व रैंकिंग में 97वें नंबर की खिलाड़ी लौरा सीगमंड ने आक्रामक खेल का प्रदर्शन करते हुए ओलंपिक चैंपियन और पिछले साल की उप विजेता झेंग किनवेन को सीधे सेटों में पराजित करके बड़ा उलटफेर किया। झेंग पिछले साल फाइनल में आर्यना सबालेंका से हार गई थीलेकिन इसके बाद उन्होंने पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीता था तथा वह सत्र के अंतिम टूर्नामेंट डब्ल्यूटीए फाइनल्स में उपविजेता रही थी। लेकिन साल के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के दूसरे दौर में उन्हें 36 वर्षीय सीगमंड से 7-6 (3), 6-3 से हार का सामना करना पड़ा। इस दौरान चेयर अंपायर ने समय बर्बाद करने को लेकर झेंग को चेतावनी भी दी। झेंग ने मैच के बाद कहा, ''मुझे लगता है कि आज मेरा दिन नहीं था मैं महत्वपूर्ण मौकों पर अंक हासिल करने में नाकाम रही। टाइम कंट्रोल को लेकर चेतावनी मिलने से भी मेरी एकाग्रता भंग हुई।'' पिछले दो बार की चैंपियन सबालेंका ने आखिरी पांच गेम जीतकर विश्व में 54वें नंबर की खिलाड़ी जेसिका बौजास मनेइरो को 6-3, 7-5 से हराकर लगातार तीसरा खिताब जीतने की तरफ कदम बढ़ाए। वह इस टूर्नामेंट में लगातार 16 मैच जीत चुकी हैं।

वर्ल्ड चैंपियन बनने के बाद अब टाटा स्टील शतरंज में हिस्सा लेंगे डी गुकेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्रैंडमास्टर डी गुकेश विश्व चैंपियन बनने के बाद शुक्रवार से यहां शुरू हो रहे टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। दिसंबर में सिंगापुर में विश्व चैंपियनशिप जीतने के बाद गुकेश ने न्यूयॉर्क में विश्व रैपिड और ब्लिट्ज टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया था। इसके बाद वह पहली बार किसी टूर्नामेंट में शिरकत करेंगे। वह शनिवार को अपना अभियान शुरू करेंगे।

शुक्रवार को उद्घाटन समारोह में जोड़ियों की घोषणा की जाएगी। पांच भारतीय पहली बार 'शतरंज का विंबलडन' कहे जाने वाले टूर्नामेंट में हिस्सा ले रहे हैं। यह दुनिया में सबसे लंबे समय तक चलने वाली प्रतियोगिताओं में से एक है जो 1938 से खेली जा रही है। दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी अर्जुन एरिगैसी 2024 में अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर इस

प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा रेटिंग वाले भारतीय खिलाड़ी के रूप में शुरुआत करेंगे।

इस दौरान वह विश्वनाथन आनंद के बाद 2800 ईएलओ रेटिंग पार करने वाले दूसरे भारतीय बन गए थे। 14 खिलाड़ियों और 13 दौर की इस प्रतियोगिता में आर प्रज्ञानानंदा भी दौड़ में होंगे। प्रज्ञानानंदा के दुनिया के युवा खिलाड़ियों में शायद सबसे ज्यादा प्रशंसक हैं।

विदित गुजराती को इस प्रतियोगिता से हटना पड़ा और आयोजकों ने उनकी जगह पी हरिकृष्णा को चुना। पांचवें भारतीय लियोन ल्यूक मेंडोंका हैं जिन्हें चैलेंजर्स वर्ग के पिछले चरण में जीत के बाद एलीट शतरंज में अपना पहला बड़ा ब्रेक मिला है।

विश्व की शीर्ष रेटिंग पर काबिज नार्वे के मैग्नस कार्लसन एक बार फिर इस टूर्नामेंट में एक बार फिर भाग नहीं लेंगे जिनकी शादी को अभी दो सप्ताह भी नहीं हुए हैं।

इसी तरह अमेरिका के तीसरी रैंकिंग के हिकारू नाकामुरा भी इस टूर्नामेंट में भाग नहीं लेंगे। अमेरिका के फैबियानो कारुआना शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी के रूप में शुरुआत करेंगे जिसमें उज्बेकिस्तान के नोडिरबेक अब्दुसत्तोरोव और चीन के गत विजेता वेई यी भी भाग लेंगे।

गांजा तस्करी का बड़ा खुलासा, पुलिस को चकमा देने आरोपियों ने चली थी बड़ी चाल, छह आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुलिस ने छत्तीसगढ़ से तस्करी कर रीवा लाई जा रही गांजे की बड़ी खेप का खुलासा किया है। तस्करों द्वारा यह खेप पुलिस को गुमराह करने के लिए रेलवे के सामान के साथ ट्रक में लोड किया गया था। जिसे रीवा लाने के बाद उसे एक बोलेरो वाहन में ट्रांसफर किया जा रहा था, तभी पुलिस ने घेराबंदी कर ट्रक सहित बलेरो वाहन को पकड़ लिया। पुलिस ने मौके से कुल 9 लाख कीमती तकरीबन 60 किलो गांजा बरामद कर छह आरोपियों को गिरफ्तार किया, जबकि एक आरोपी फरार बताया गया है।

दरअसल यह खुलासा आज रीवा जोन के प्रभारी आईजी साकेत प्रकाश पांडे ने किया। प्रभारी आईजी ने जानकारी देते हुए बताया है कि बीते दिवस मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई थी कि छत्तीसगढ़ के रायपुर से गांजे की बड़ी खेप रीवा आने वाली है। उक्त सूचना के बाद पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह को कार्रवाई के लिए निर्देशित किया गया। जिस पर एक विशेष टीम गठित कर रीवा लाई जा रही गांजे की खेप सहित तस्करों को पकड़ने के निर्देश दिए गए। बताया गया कि तस्करों ने गांजे की खेप को छत्तीसगढ़ के रायपुर से पुलिस को गुमराह करने के लिए रेलवे के सामान के साथ ट्रक में लोड कर रखा था। यह ट्रक रीवा पहुंचने के बाद शहर के चोरहटा थाना क्षेत्र स्थित संजय ढाब के समी पहुंचकर गांजे की खेप को बोलेरो वाहन से ट्रांसफर करने की फिराक में था तभी पुलिस ने घेराबंदी करते हुए ट्रक सहित बलेरो वाहन को अपने कब्जे में लेकर मौके पर मौजूद आधा दर्जन गांजा तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को मौके पर ली गई तलाशी के दौरान तकरीबन 60 किलो गांजा मिला है जिसकी अनुमानित कीमत 9 लाख रुपये आंकी गई है। जबकि जप्त किए गए ट्रक और बलेरो वाहन सहित अन्य सामान मिलाकर कुल 40 लाख का मशरूका बरामद किया गया। पुलिस के मुताबिक गांजा तस्करी के मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपियों में सतेंद्र सिंह पिता स्वर्गीय भीम सेन सिंह निवासी ग्राम लूक थाना जवा हाल शिवनगर लूक हाउस थाना विश्वविद्यालय, विजय सिंह पिता राम सुशील सिंह निवासी कनपुरा थाना जवा, उत्तम सिंह पटेल पिता बलराम सिंह निवासी कनपुरा थाना जवा, सौरभ सिंह पिता मोरध्वज सिंह निवासी जवा वड क्रमांक एक, मयंक सिंह पिता मुन्नी लाल सिंह निवासी डिहिया खुर्द थाना जवा सहित लोकेश सिंह पिता स्वर्गीय छविलाल सिंह निवासी निमहगना थाना जवा शामिल है जबकि हित सिंह निवासी मलपार थाना सोहागी फरार बताया गया है। पुलिस ने फिलहाल इन सभी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट का अपराध दर्ज किया है।.

उप मुख्यमंत्री ने दिव्यांगजनों को बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल दी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने दिव्यांगजन तेजभान पटेल निवासी लौआ लक्ष्मणपुर, दीपक सिंह गहरवार निवासी बोदाबाग तथा शशिकांत पाण्डेय निवासी बुड़वा को बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल प्रदान की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों की सेवा ईश्वरीय सेवा है। बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल मिल जाने से इनकी दिनचर्या सरल, सुलभ व आराम दायक हो जायेगी। उन्होंने भारतीय रेडक्रास टीम रीवा की सेवा भावना की सराहना की। इस अवसर पर चेयरमैन रेडक्रास सोसायटी डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी, पीयूष पटेल, राजीव तिवारी, पवन शुक्ला, डा. ऋषभ तिवारी,प्रो.अजय शंकर पांडेय,राजा भैया, संजय शुक्ला सहित गणमान्य जन उपस्थित रहे।

मऊगंज में आयोजित हुआ स्वामित्व योजना पट्टा वितरण कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा स्वामित्व योजना का केन्द्र स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसे मऊगंज जिले में भी देखा व सुना गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से स्वामित्व योजना के चयनित लाभार्थियों से संवाद करते हुए इलेक्ट्रानिक माध्यम से पट्टों का वितरण किया। मऊगंज जिलें में स्वामित्व योजना पट्टा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम ने पड़रिया, झांझर, टटिहरा में हितग्राहियों को पट्टे वितरित किये। जिला स्तरीय कार्यक्रम कलेक्ट्रेट कार्यालय सभागार में आयोजित हुआ। इस दौरान स्वामित्व योजना के पात्र हितग्राहियों को भू-स्वामी अधिकार के अभिलेख वितरित किये गये। इस अवसर पर कलेक्टर अजय श्रीवास्तव सहित जनप्रतिनिधिगण व अधिकारी एवं हितग्राही उपस्थित रहे।

राजमाता की पुण्यतिथि पर लक्ष्मण बाग में आयोजित हुई श्रद्धांजलि सभा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आज सुबह बंधवेश्वरी स्वर्गीय राजमाता साहिबा का पुण्यतिथि का कार्यक्रम लक्ष्मण बाग में आयोजित किया गया। जहां युवराज दिव्यराज सिंह एवं नव निर्वाचित भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान जिला अध्यक्ष और दिव्यराज सिंह ने लक्ष्मण स्थित छतरियों का निरीक्षण कर कुछ अहम फैसले लिए। इनके बेहतर रखरखाव के लिए सभी से सुझाव लिए गए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से आदित्य प्रताप सिंह, असद खान, राकेश सिंह, बृजेंद्र सिंह, रामजी शर्मा, विनोद तिवारी, जय शर्मा, फौजिया सौदागर, आरती सक्सेना, संजय सिंह, राजू खान, पंकज सिंह, मदन सिंह, राम मित्र शर्मा, जावेद खान, गुलाम अहमद, अवनीश पांडे, प्रद्युम्न सिंह, महेंद्र अवधिया, विक्रम द्विवेदी सहित पुरोहित उपस्थित रहे।

महाकुंभ के यात्रियों की सुरक्षा व सुविधा के लिए पुलिस ने हाईवे पर तैनात किये पेट्रोलिंग वाहन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ में जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए रीवा पुलिस ने हाईवे पर तीन पेट्रोलिंग वाहनों को तैनात किया है। ये पेट्रोलिंग वाहन हाईवे में अलग-अलग स्थानों पर तैनात किए गए हैं। जो हाईवे पर पेट्रोलिंग भी करेंगे। बतादें कि महाकुंभ के यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए रीवा पुलिस के द्वारा हाईवे पेट्रोलिंग वाहन को आज पुलिस कंट्रोल रूम से एडिशनल एसपी विवेक लाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस दौरान सीएसपी शिवाली चतुर्वेदी और सीएसपी ऋतु उपाध्याय भी मौजूद रहीं। तीनों वाहन हाईवे पेट्रोलिंग के लिए रवाना किए गए। जो जोगिनहाई टोल प्लाजा, चोरहटा बाईपास और चाकघाट में तैनात किए गए हैं। एएसपी ने बताया कि लोगों की सुविधा एवं सुरक्षा को के लिए वाहन रीवा पुलिस के द्वारा तैनात किए जा रहे हैं, ताकि रीवा से होकर महाकुंभ में जाने वाले यात्रियों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना ना करना पड़े।

पुस्तैनी जमीन का पट्टा पाकर सुकून का अनुभव कर रही हैं नीतू वर्मा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। टीकर निवासी नीतू वर्मा पुस्तैनी जमीन में अपने घर में रह तो रही थीं मगर उसका पट्टा उनके पास नहीं था। उन्हें डर लगा रहता था कि कोई हटा न दें। स्वामित्व योजना के तहत पट्टा पाकर नीतू वर्मा सुकून का अनुभव करते हुए कहती हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कारण मुझे अब पट्टा मिल गया और मैं निधश्चत हो गई। उन्होंने प्रधानमंत्री जी व मुख्यमंत्री जी का ह्रदय से धन्यवाद दिया।

जिले में आयोजित हुआ स्वामित्व योजना पट्टा वितरण कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा स्वामित्व योजना का केन्द्र स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। रीवा जिले में भी इस कार्यक्रम को देखा व सुना गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से स्वामित्व योजना के चयनित लाभार्थियों से संवाद करते हुए इलेक्ट्रानिक माध्यम से पट्टों का वितरण किया। जिलें के विभिन्न जनपद एवं ग्राम पंचायत मुख्यालयों में स्वामित्व योजना पट्टा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधायक गुढ नागेन्द्र सिंह ने रायपुर जनपद पंचायत मुख्यालय में हितग्राहियों को पट्टे वितरित किये। सिरमौर में आयोजित कार्यक्रम में विधायक दिव्यराज सिंह ने स्वामित्व योजना के तहत हितग्राहियों को स्वामित्व योजना के पट्टे बांटे। मनगवां तहसील के ग्राम पंचायत बुढ़वा में विधायक इंजी. नरेन्द्र प्रजापति एवं अध्यक्ष जनपद पंचायत विकास तिवारी की उपस्थिति में हितग्राहियों को पट्टे वितरित किये गये।

प्रशासन ने पूरी की मऊगंज विधायक की जिद, रात 1 बजे पुलिस पर की बड़ी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अक्सर धरने पर बैठकर अपनी बात मनवाने वाले मऊगंज विधायक प्रदीप पटेल शुक्रवार की रात एक बार फिर कलेक्टरेट कार्यालय में देर रात तक धरने पर बैठ गए और नाबालिक किशोरी के मामले में पुलिस के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड़ गए। कलेक्ट्रेट कार्यालय में रात करीब 1 बजे तक विधायक तब तक धरने पर डटे रहे, जबतक कि संबंधित लौर थाने के प्रभारी सहित बीट प्रभारी को निलंबित नहीं कर दिया गया। बतादें कि यह पूरा मामला मऊगंज जिले के लौर थाना क्षेत्र के सीतापुर गांव का है। जहां एक आदतन अपराधी मुस्लिम युवक पर नाबालिक किशोरी को बहला फुसलाकर उसका अपहरण करने सहित लव जिहाद का आरोप लगा है। मामले में आरोपी की मुंबई से गिरफ्तारी होने के बाद भी लौर थाने की पुलिस पर लापरवाही बरतने सहित आरोपी को संरक्षण देने और पीड़ित परिवार से पैसों की मांग करने सहित अन्य आरोप लगाते हुए कारवाई की मांग पर अड़ गए।

बताया जा शुक्रवार की देर शाम विधायक प्रदीप पटेल प्रयागराज से चल रहे महाकुंभ से लौटने के बाद सीधे सीतापुर गांव पहुंचे और फरियादिया के घर में धरना दे दिया, लेकिन जब बात नहीं बनी तो वह कलेक्टरेट कार्यालय पहुंच गए और वहां फिर धरने पर बैठ गए। देर रात तक चले मान मनोल के बाद विधायक उस वक्त धरने से उठे जब मऊगंज एसपी रसना ठाकुर ने लौर थाने के प्रभारी जगदीश सिंह ठाकुर और संबंधित बीट प्रभारी को निलंबित कर दिया।

जिले में समर्थन मूल्य पर अब तक 3446444 क्विंटल धान की खरीद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य देने के लिए पंजीकृत किसानों से जिले भर में बनाये गये 95 खरीदी केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर धान का उपार्जन किया जा रहा है। जिले में अब तक 54388 किसानों से अब तक 3446444.95 क्विंटल धान की खरीद की गयी है। इस संबंध में संयुक्त कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी खाद्य पीके पाण्डेय ने बताया कि अब तक की गयी खरीदी के लिए किसानों को 792 करोड़ 68 लाख 21 हजार 53 रूपये मंजूर किये जा चुके हैं। किसान अपनी सुविधा के अनुसार स्लॉट बुक करके खरीदी केन्द्र और खरीदी के समय का निर्धारण करके समर्थन मूल्य पर धान दे सकते हैं। खरीदी के लिए अब तक 58763 किसानों ने स्लॉट बुक कराये हैं। अब तक 32 लाख 69 हजार 235 क्विंटल धान का परिवहन करके सुरक्षित भण्डारण कर दिया गया है। अब तक किसानों के बैंक खाते में 612 करोड़ 91 लाख 50 हजार 532 रुपए जारी किए जा चुके हैं। धान खरीदी की अंतिम तिथि 23 जनवरी निर्धारित है।

रीवा में है महाभारत काल का औषधी पौधा, नाम है शल्यकर्णी

महाभारत के युद्ध में घायल सैनिकों का हुआ था ईलाज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। दुलर्भ औषधियों से वन क्षेत्र लबरेज है। ऐसी वन औषधियों के संरक्षण और संरक्षित करने का काम समय-समय पर वन विभाग कर रहा है। ऐसी ही दुलर्भ वन औषधियों में शल्यकर्णी नामक पौधा भी शामिल है। इस दुलर्भ औषधी पौधे को रीवा के वन विभाग स्थित कार्यालय में संरक्षित किया गया है। इतना ही नही इस पौधे को तैयार करने का काम भी किया जा रहा है।

जानकारी के तहत शल्यकर्णी नामक इस औषधी पौधे का जो इतिहास सामने आ रहा है, उसके तहत महाभारत का भंयकर युद्ध हुआ था। इस दौरान बड़ी संख्या में सैनिक घायल हो गए थें। उनके शरीर में भाला, तलवार और तीर के गहरे घाव हो जाने के कारण ईलाज के लिए ले जाया गया। जंहा वैद्य इस शल्यकर्णी नामक पौधे के छाल और पत्ते से तैयार रस को कपड़े में डालकर सैनिकों के घाव में बाधा। सैनिकों के घाव भरने के साथ ही वे युद्ध के लिए दुबारा तैयार हो गए। छाल और पत्ते के रस से जिस तरह ईलाज किया गया, उसके चलते इस पौधे का नाम शल्यकर्णी पड़ गया। आयुर्वेद का महागंथ्र चरक में भी इस शल्यकर्णी का उल्लेख है।

ऐसे सामने आया शल्यकर्णी: जानकारी के तहत आदिवासियों ने इस औषधी पौधे का प्रदर्शन किए थें। जिसके बाद यह दुलर्भ औषधी सामने आया। ऐसी किंवदती है कि आदिवासियों ने मछली पर तीर चलाई और उसके शरीर में गहरा घाव हो गया। उन्होने पेड़ से इस पत्ते को तोड़कर मछली को लेपेटलिया और घर ले गए। बाद में उन्होने मछली के शरीर से पत्तों को हटाया तो तीर के लगे हुए घाव मछली के शरीर गायब थें। तब से वे चोट लगने पर इस पत्ते का इस्तेमाल करने लगें।

विंध्य की पहाड़ियों पर पाया गया यह पौधा: जानकारी के तहत यह पौधा हिमालय पर्वत के आलावा पंचमढ़ी अमरकंटक और रीवा सीधी के मध्य छुहिया पहाड़ में पाए जाते थे. कहा जाता है की यह खास पौधे अब काफी कम संख्या में छुहिया पहाड़ मौजूद है. मगर यह गुणकारी पौधा अब अन्य स्थानों से धीरे धीरे करके लुप्त होता जा रहा है.

फाइलेरिया उन्मूलन संबंधी बैठक मऊगंज में 23 जनवरी को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव की अध्यक्षता में फाइलेरिया उन्मूलन से संबंधित जिला टास्क फोर्स बैठक 23 जनवरी को दोपहर 12 बजे से कलेक्ट्रेट सभागार मऊगंज में आयोजित की गयी है। बैठक में मऊगंज जिले के हनुमना विकासखण्ड में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम में सामूहिक दवा सेवन अभियान के सफल क्रियान्वयन के संबंध में विचार विमर्श किया जायेगा।

जिले भर में जनकल्याण अभियान के लगाये जा रहे हैं शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पात्र हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ देने के लिए जिले भर में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले के सभी विकासखण्डों में ग्राम पंचायतवार शिविर लगाये जा रहे हैं। इन शिविरों में शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है साथ ही पात्र हितग्राहियों से आवेदन भरवाकर उन्हें हितलाभ का वितरण किया जा रहा है। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि जनकल्याण अभियान के तहत 19 जनवरी को विभिन्न स्थानों में शिविर लगाये जायेंगे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।